ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 2 अंक : 4 अप्रैल - मई 2012 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

बरुथिनी एकादशी एवं अक्षय तृतीया	डा. महेश पारासर	4
नाम बदलने से क्यों मिलती हैं.....	डा. रचना भारद्वाज	6
'''अच्छे सलाकार होते है वृष लग्न के जातक''	डा. शोनू मेहरोत्रा	7
नव संवत्सर 2069 व दशाधिकारी शुभाशुभ फल	श्रीमती कविता बंसल	8
वासन्तिक नवरात्रि व्रत	पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	9
आपकी जन्म तिथि और आप	मोनिका गुप्ता	10
शिष्यों को शिष्टाचार	श्रीमती नूतन	10
नीचे सोना कष्टकारी''	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	11
अंक विद्या और आपका भाग्य	श्रीमती पूनम दत्ता	11
ग्रह के बदले रुप को पहिचाने	पं. आर. एस. द्विवेदी	12
विवाह में आने वाली समस्याएं व उनके उपाय	श्रीमती रेखा जैन	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
'लोभी नाई'	विजय शर्मा	16
पूजा – सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC**

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262

ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 2 अंक : 4 अप्रैल - मई 2012 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

बरुथिनी एकादशी एवं अक्षय तृतीया	डा. महेश पारासर	4
नाम बदलने से क्यों मिलती हैं.....	डा. रचना भारद्वाज	6
'''अच्छे सलाकार होते है वृष लग्न के जातक''	डा. शोनू मेहरोत्रा	7
नव संवत्सर 2069 व दशाधिकारी शुभाशुभ फल	श्रीमती कविता बंसल	8
वासन्तिक नवरात्रि व्रत	पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	9
आपकी जन्म तिथि और आप	मोनिका गुप्ता	10
शिष्यों को शिष्टाचार	श्रीमती नूतन	10
नीचे सोना कष्टकारी''	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	11
अंक विद्या और आपका भाग्य	श्रीमती पूनम दत्ता	11
ग्रह के बदले रुप को पहिचाने	पं. आर. एस. द्विवेदी	12
विवाह में आने वाली समस्याएं व उनके उपाय	श्रीमती रेखा जैन	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
'लोभी नाई'	विजय शर्मा	16
पूजा – सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

बरुथिनी एकादशी एवं अक्षय तृतीया

यह व्रत वैखाश कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन रखा जाता है। यह व्रत सुख–सौभाग्य का प्रतीक है। इस व्रत का महत्त्व सुपात्र ब्राह्मण को दान देने, करोड़ों वर्ष तक नग्न तपस्या करने तथा कन्यादान के भी फल से बढ़कर है। व्रत करने वाले के लिये खासतौर से उस दिन खान, दातुन, फाड़ना, परन्दिा, क्रोध करना और असत्य बोलना वर्जित है। इस व्रत में तेलयुक्त भोजन नहीं करना चाहिए। इसका माहात्म्य सुनने से सहस्र गऊओं की हत्या का भी दोष नष्ट हो जाता है। इस प्रकार यह बहुत ही फलदायक व्रत है।

बरुथिनी एकादशी व्रत की कथा

पुराने समय की बात हे एक बार नर्मदा नदी के तट पर माधाता नामाक राजा राज्य–सुख–भोग रहा था। राजकाज करते हुए भी वह अत्यंत दानशील तथा तपस्वी था। एक दिन जब वह तपस्या कर रहा था उसी समय एक जंगली भालू आकर उसका पैर चबाने लगा। थोड़ी देर बाद वह राजा को घसीटकर वन में ले गया। तब राजा ने घबराकर तापस धर्म के अनुकूल हिंसा, क्रोध न करके भगवान विष्णु से प्रार्थना की। भक्तवत्सल भगवान प्रकट हुए और भालू को अपने चक्र से मार डाला। राजा का पैर भालू खा चुका था इससे वह बहुत ही शोकाकुल हुआ। विष्णु भगवान ने उसको दुःखी देखकर कहा–कि "हे वत्स! मथुरा में जाकर तुम मेरी वाराह अवतार मूर्ति की पूजा और बरुथिनी एकादशी का व्रत करो। उसके प्रभाव से तुम फिर से पूर्ण अंगों वाले हो जाओगे।" भालू ने जो तुम्हें काटा है यह तुम्हारा पूर्वजन्म का अपराध था। राजा ने इस व्रत का अपार श्रद्धा से किया तथा सुन्दर अंगों वाला हो गया।

अक्षय तृतीया को आखातीज के नाम से भी जाना जाता है। आखातीज का व्रत वैशाख माह में सुदी तीज को किया जाता है।

इस दिन श्री लक्ष्मी जी सहित भगवान नारायण की पूजा की जाती है। पहले भगवान नारायण और लक्ष्मी जी की प्रतिमा को गंगाजल से स्नान कराना चाहिए। उन्हें पुष्प और पुष्प–माल्यार्पण करना चाहिए। भगवान की धूप, दीप से आरती उतारकर चंदन लगाना चाहिए। मिश्री और भीगे हुऐ चनों का भोग लगाना चाहिए। भगवान को तुलसी–दल और नैवेद्य अर्पित कर ब्राह्मणों को भोजन कराकर श्रद्धानुसार दक्षिणा देकर विदा करना चाहिए। इस दिन सभी को भगवत्–भजन करते हुए सद्चिंतन करना चाहिए। अक्षय तृतीया के दिन किया गया कोई भी कार्य बेकार नहीं जाता इसलिये इसे अक्षय तृतीया कहा जाता है। अक्षय तृतीया का व्रत भगवान लक्ष्मीनारायण को प्रसन्नता प्रदान करता है। वृंदावन में केवल आज के ही दिन बिहारीजी के पाँव के दर्शन होते हैं। किसी भी शुभ कार्य को करने के लिये यह दिन बहुत ही शुभ माना जाता है। इस दिन प्रातः काल में मूंग और चावल की खिचड़ी बिना नमक डाले बनाए जाने को बड़ा ही शुभ माना जाता है। इस दिन पापड़ नहीं सेंका जाता और न ही पक्की रसोई बनाई जाती है। इस दिन नया घड़, पंखा, चावल, चीनी, घी, नमक, दाल, इमली, रुपया, इत्यादि को श्रद्धापूर्वक ब्राह्मण को दान देते हैं।

अक्षय तृतीया या आखातीज व्रत की कथा :– अत्यन्त प्राचीन काल की बात है। महोदय नामक एक वैश्य कुशावती नगरी में निवास करता था। सौभाग्यवश महोदय वैश्य को एक पंडित द्वारा अक्षय तृतीया के व्रत का विवरण प्राप्त हुआ। उसने भक्ति–भाव से विधि वे नियमपूर्वक व्रत रखा। व्रत के प्रभाव से वह वैश्य कुशावती नगरी का महाप्रतापी और शक्तिशाली राजा बन गया। उसका कोष हमेशा स्वर्ण–मुद्राओं, हीरे–जवाहरतों से भरा रहता था। राजा स्वभाव से दानी भी था। वह उदार मन होकर बिना सोचे समझे दोनों हाथों से दान देता था। एक बार राजा के वैभव और सुख–शान्तिपूर्ण जीवन से आकर्षित होकर कुछ जिज्ञासु लोगों ने राजा से उसकी समृद्धि और प्रसिद्धि का कारण पूछा। राजा ने स्पष्ट रुप से अपने अक्षय तृतीया व्रत की कथा को सुनाया और इस व्रत की कृपा के बारे में भी बताया। राजा से यह सुनकर उन जिज्ञासु पुरुषों और राजा की प्रजा ने नियम और विधान सहित अक्षय तृतीया व्रत रखना प्रारम्भ कर दिया। अक्षय तृतीया व्रत के पुण्य प्रताप से सभी नगर–निवासी, धन–धान्य से पूर्ण होकर वैभवशाली और सुखी हो गये। हे! अक्षय तीज माता जैसे आपने उस वैश्य को वैभव–सुख और राज्य प्रदान किया वैसे ही अपने सब भक्तों एवं श्रद्धालुओं को धन–धान्य और सुख देना। सब पर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखना। हमारी आप से यही विनती है।

महेश पारासर

पाठकों के पत्र

श्रृदेय गुरुजी, सादर नमस्कार

भविष्य निर्णय का गत अंक बहुत रोचक लगा। आपकी पत्रिका मार्ग दर्शक का कार्य करती है। पत्रिका के लेख अंधविश्वास को दूर करते हुए धर्म और आध्यात्म का रास्ता दिखाते हैं। पिछले कुल अंक तो ऐसे हैं जिन्हें बार–बार पढ़ने की इच्छा करती है। आपकी पत्रिका का अंक संग्रहणीय होने के साथ–साथ ऐसा होता है कि यदि किसी कारण से वह अंक कुछ समय बाद पुनः पढ़ा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे शायद पहले कुछ छूट गया था। आपकी पत्रिका के लिए शुभ विचार रखने वाली आपकी बेटी।

राखी चौधरी, आगरा

आदरणीय पारासर जी

आपकी पत्रिका भविष्य निर्णय धर्म व ज्योतिष के क्षेत्र की वह पत्रिका है जो दिन पर दिन अपनी जड़ें मजबूती के साथ जमा रही है। डॉ. शोनू मेहरोत्रा के लेख, मोनिका गुप्ता कविता बंसल जी के लेख बेहद रुचिकर व ज्ञानवर्धक थें।

सधन्यवाद

श्री मनीष गौर

अलीगढ

अमृत वचन

1. धन स्वंय एक बड़ा खतरा है, वह तुम्हें खतरों से कैसे बचा सकता है?
2. संघर्षो के बिना मन व बुद्धि का विकास नहीं होता।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– श्रीमान् जी मुझे व्यवसाय में लगातार नुकसान हो रहा है। काफी कर्ज में आ चुका हूँ समाधान वतायें।

उत्तर – आप 7.25 रत्ती के लगभग पन्ना रत्न धारण करें। शनिस्त्रोक्त का रोजाना तीन बार पाठ करें। पंक्षियों को दाना चुगायें। गुरू यंत्र को हमेशा अपने पास रखें एवं रोजाना धूपबत्ती दिखायें।

पवन बंसल, आगरा

प्रश्न– मेरा प्रमोशन कब तक होगा?

उत्तर – प्रमोशन का समय 22 मार्च 2012 से 09 जून 2013 तक हैं। आप मंगल यंत्र की पूजा, शनिस्त्रोक्त का पाठ, पंक्षियों को दाना चुगायें। पुखराज रत्न 5–6 रत्ती के लगभग धारण करें।

सुनीता चौहान, अलीगढ़

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– मेरे घर में सभी पेट की समस्या से ग्रस्त हैं। नक्शा देखकर उचित उपाय बताये।

अतुल शर्मा, गाजियाबाद

समाधान– आपके घर में रसोई ईशान कोण में स्थित है। जिसके कारण उक्त समस्या है। रसोई को आग्नेय कोण में ले जायें तो तुरन्त लाभ मिलेगा।

समस्या– मेरे बच्चे मेरा कहना नही मानते हैं। मेरे घर का नक्शा देखते हुए उचित उपाय बताये।

मुकुल गुप्ता, फिरोजाबाद

समाधान– आपने अपने बच्चो का कमरा नैऋत्य कोण में कर दिया है। जो गलत है आप अपने बच्चो का कमरा ईशान या उत्तर –पश्चिम में कर दें स्थितियाँ अनुकूल हो जायेगी।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203

नाम बदलने से क्यों मिलती हैं कामयाबी?

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

क्या हम अंकों के बिना जीवन के बारें में सोच सकते हैं? दिन, दिनांक, पैसा, तापमान,, टेलीफोन, पहचान पत्र, स्टॉक एक्सचेंज, कम्प्यूटर आदि सभी की उत्पत्ति अंको से ही हुई है। सभी वस्तुएं, नाम, जन्मतिथियां, जन्मस्थान आदि को अंको के आधार पर सहेजकर हम अपने भाग्य, अपनी सफलता आदि को बदल सकते हैं। हांलांकि यह जरुरी नहीं है कि ऐसा करना भर ही आपकी सफलता की गारंटी हो। उदाहरण के लिए एकता कपूर का नाम लिया जा सकता है, जिन्हों अपने तमाम टी. वी. सीरियलों के नाम **'क'** शब्द से ही आरंभ किए और जबरदस्त सफलता पाई इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि हर किसी को **'क'** शब्द से ऐसी ही सफलता मिल जाएगी।

दरअसल जन्म के समय आपको जो नाम दिया जाता है, उसका आपके जीवन पर व्यापक असर होता है। क्योंकि ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु एक–दूसरे से जुड़ी हुई है। चाहे वह दृश्य हो य अदृश्य, प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष, द्रव्य हो या ऊर्जा उनके बीच गुप्त संबंध होते हैं। इस ब्रह्मांड में कुछ भी इकाई नहीं है, बल्कि सभी वस्तुएं एक अदृश्य धागे से एक–दूसरे से बंधी हुई हैं। जो हमारे लिए दृश्य है, वह हमारे लिए प्रत्यक्ष है, लेकिन जरुरी नहीं कि वह हर किसी के लिए प्रत्यक्ष ही हो। हां, अदृश्य को जानने–समझने के लिए उस धागे को पकड़ने की जरुरत है, जिससे ब्रह्मांड की संपूर्ण बंधी हुई हैं। इसके लिए केवल अभ्यास की भी जरुरत पड़ती है।

अंकशास्त्र के अनुसार जन्म के समय दिया गया नाम आपके बारे में बहुत कुछ कहता है। इससे आपके आचार, व्यवहार, योग्यता, प्रतिभा, क्षमता, सकारात्मक व नकारात्मक गुण आदि का भी पता चलता है। अतः जब आप अपना नाम दबलते हैं, तो आपकी क्षमता पर इसका असर पड़ता है और आप बदलाव महसूस करते हैं। यह सच है कि ऐसा करने से आपके अंदर बदलव आता भी है। इसमें से कुछ लोग जन्म के समय दिए गए नाम से अलग नाम का प्रयोग करते हैं। खासकर गायक, अभिनेता, लेखक आदि तो बदले नामों का ही प्रयोग करते हैं। ऐसा वे अलग–अलग कारणों से करते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि कुछ लोग शादी, गोद, लेने, कैरियर की जरुरतों आदि के अनुसार भी अपना नाम बदल लेते हैं, जिसका निजी जीवन से गहरा ताल्लुक होता है। यह बदलाव यदि सही दिशा में होता हैं, तो ऐसे लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन भी होते हैं।

अंकशास्त्र किसी व्यक्ति, स्थान या कंपनी आदि जिससे आप अच्छे संबंध विकसित करना चाहते हों, की ऊर्जा का पता लगाने में भी आपकी मदद करता है। जन्म के समय दिया गया आपका नाम, आपकी छवि का एक ताकतवर प्रतिबिंब होता है, जो यह बताता है कि आने वाले समय में आप क्या बनना चाहते हैं। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार नाम किसी व्यक्ति का जीवित अंश होता है। यह उस व्यक्ति का जीवित प्रतिबिंब होता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार उसकी आत्मा, व्यक्तित्व, शरीर और अंतरात्मा होती है। मूल नाम आपकी अंदररुनी व बाह्य ताकत का एक स्त्रोत है। अतः नाम परिवर्तन का अधिकांश लोगों पर जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। यह सफलता व असफलता के बीच के अंतर को भी इंगित करता है। नाम आपकी प्रकृति, सोच, व्यक्तित्व आदि का नव–निर्माण करता है। कुछ लोगों के लिए अंको के महत्व को समझना मुश्किल हो सकता है, लेकिन मैं कुछ ऐसे अंक और उनके महत्व बता रही हूं, जिनकी रहस्मय शक्तियों का असर हमारे ऊपर पड़ता ही है।

जैसे–अंक 7 प्रकृति की रहस्यमय शक्तियों का परिचायक है। 7 स्वर्ग, सप्ताह में 7 दिन, 7 महाद्वीप और पवित्र फूल कमल की 7 पंखुड़ियां होती हैं। इसे जानने के लिए सबसे पहले अंक 1 को लीजिए और इसे 7 अंकों का बनाने के लिए इसके आगे 6 शून्य बैठा दीजिए। इसे अंक 7 से भाग दीजिए। इस प्रकार 142857 प्राप्त होता है।

इस अंक पर आप अपनी इच्छा के अनुसार शून्य बैठा दें और फिर इसे अंक 7 से भाग दें, आपको 142857 अंक ही प्राप्त होगा। अतः 142857 अंक को एक पवित्र अंक माना जाता है। इस अंक को एक अंक में बदलने के लिए यदि इन्हें जोड़ा जाए, तो अंक 9 (1+4+2+8+5+7=27=2+7=9) प्राप्त होता है। इस प्रकार आप इकाई के पहले अंक से शुरु करते हैं और आपको इसका अंतिम अंक प्राप्त होता है। अंक 9 के आगे के अंको को घटाकर 1 अंक का बनाया जा सकता है।

अंग्रेजी वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण का आंकिक अपना अलग महत्व

शेष पेज 17 **पर**.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. **09717195756**
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2850666

''अच्छे सलाकार होते है वृष लग्न के जातक''

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445
e-mail. mehrotraa shonu@gamail.com

इस अंक में हम बात करेंगे वृष लग्न वालों की। वृष काल पुरुष की कुंडली में दूसरी राशि होती है। यह कृतिका नक्षत्र के तीन चरण रोहिणी के चार चरण और मृगशिरा के दो चरणों से मिल कर बनी है। इसकी गणना सौम्य राशियों में होती है। यह राशि दक्षिण दिशा की राशि है। स्थिर स्वभाव वाली यह राशि स्त्री जाति की राशि है। मेष की तरह इसका भी पीठ की ओर से उदय होता है। इसलिए इसे भी पृष्ठोदय राशि कहते है।

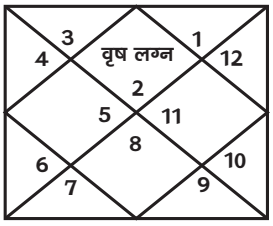

इस राशि में चंद्रमा उच्च का होता है। 4 से 30 अंश तक चंद्रमा मूल त्रिकोण में होता है। छाया ग्रह राहू भी इस राशि में उच्च का होता है पर केतु नीच का होता है। वृष लग्न के जातक की आंखे बड़ी और सुंदर होती हैं। यह व्यक्ति बहुत अच्छा सलाहाकार होता है। देखा गया है कि इस लग्न वाला व्यक्ति लोगों को परखने में कभी धोखा नहीं खाता है और बहुत ईमानदारी से सलाह देता है। वह अपने सामने वाले से वात करके सामे वाले के चरित्र और स्वभाव के बारे में जान लेते है। इसलिए यदि वृष लग्न वाले को सलाहकार बनाया जाए तो वह बहुत लाभकारी होते हैं। ऐसे जातक वफादार होते है। इनके व्यक्तित्व मैं एक चुंबकीय आकर्षण होता है। जातक जल्दी स्थान परिवर्तन नहीं करता है और यदि करता है तो बहुत सोच समझकर कर करता है। वृष जातकों को देव स्थलों में घूमने का बहुत शौक होता है। यह लग्न ही एक मात्रा लग्न है जो अन्य की अपेक्षा सबसे अधिक मेहनती होती है। वृष का अर्थ है बैल। बैल के सहयोग से ही धरती से अन्न निकाला जा सकता है। अतः वृष लग्न के जातक में दबी हुई चीजों को निकालने की बिलक्ष प्रतिभा होती है। इसका स्वामी शुक्र है। यह एक भाग्य शाली राशि है।

वृष राशि रात्रि बली होती है। इस लग्न का जातक स्पष्ट बोले वाला होता है। एवं कुटुंब के साथ रहने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति में स्नेह की भावना अधिक होती है। वृष लग्न की कुंडली में शनि बहुत अच्छे परिवर्तन देता है क्योंकि शनि–शुक्र परम मित्र होते हैं। शनि कर्म और लाभ का स्वामी होता है। बुध भी इस लग्न वालों को शुभ फल देता है। मूल त्रिकोण में होने के कारण यह अच्छा फल देता है। वृष लग्न वालों की कुंडली में यदि बुध अच्छे हो तो ऐसा जातक बुद्धिमान होता है। यह एक मात्र ऐसी राशि है जहाँ पर बुध की दूसरी राशि अर्थात मिथुन दूसरे भाव में पड़े तो जातक को वाणी कुटुंब और राशि पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते है।

इस राशि के जातकों को आग और करेंट से दूर रहना चाहिए इस लग्न वालों के लिए क्रीम रंग शुभ होता है। ऐसे जातकों को चटकीलें लाल रंग के वस्त्र धारण नहीं करने चाहिए। क्रीम के अतिरिक्त नीला रंग भी धारण कर सकते है। ऐसे जातक को व्यायाम नित्य करना चाहिए। व्यायाम करने से वृष का कारक ग्रह शनि प्रसन्न रहता है। चूंकि वह कर्म और लाभ का स्वामी है। इसलिए उसकी प्रसन्नता मैं ही वृष के जातकों की प्रगति होती है। चंद्रमा को तीसरे घर का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण जातक की रंगमंच थियेटर और शास्त्रीय संगीत में रूचि होती है। चंद्रमा उच्च का होकर लग्न में बैठे जाए तो अत्यधिक कल्पना शील हो जाते है। पराक्रम का स्वामी चंद्रमा अधिक कल्पना शक्ति देता है। ऐसे जातकों का जीवन संघर्ष पूर्ण रहता है लेकिन बाद मे मध्य और अंत तक जीवन सुखमय होता है। इस लग्न के जातकों को सुख की प्रगति के लिए सूर्य भगवान को प्रसन्न करना चाहिए। चौथे भाव अर्थात सुख के घर में सिंह राशि पड़ती है और सिंह का स्वमी सूर्य हैं इसलिए घर की सुख–शांति के लिए सूर्य भगवान को प्रसन्न करना चाहिए। वृष के जातकों के लिए मंगल बहुत अच्छा परिणाम नहीं देता है, क्योंकि मंगल की पहली राशि मेष द्वादश में और दूसरी राशि वृश्चिक सप्तम में पड़ती है। मंगल के शुभ परिणामों के लिए जातक को बचपन से ही हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए ताकि पूर्व जन्मों में की गई गलतियों की क्षमा प्रार्थना की जा सकें।

व्यक्ति के पूर्व जन्मों के कमी के आधार पर ही लग्न मिलती है। इस लग्न के जातक को ध्यान में रखना चाहिए कि काल पुरूष की कुंडली में भाग्य भाव की राशि धनु उनके अष्टम स्थान में पड़ती है। अष्टम का अर्थ होता है जमीन के नीचे दबी हुई वस्तुए कहने का आशय है कि कुछ पाने के लिए जमीन खोदनी यानी मेहनत करनी पड़ेगी इसलिए आपको वृष राशि प्राप्त हुई है जाकि जमीन के नीचे से आप अपने भाग्य को फलीभूत कर सकें। अष्टम और दशकदश (लाभ) देनें का स्वामी गुरु होता है और गुरु मेहनत करने वालों पर ही प्रसन्न होते हैं। इस लग्न के जिन जातकों के कान बड़े हों उनकी इस जन्म में बहुत प्रगति होती है। ऐसा जातक धर्म सहिष्णुता से ओत–प्रोत रहता है।

उसे दुख में अत्यंत सहनशीलता प्राप्त रहती है। ऐसे जातकों की जनसंपर्क बहुत अच्छा होता है। यदि आपको अपनी लग्न नहीं मालूम है तो आप फोन पर लग्न जान सकते है। ❋❋❋

विशेषताऐं

1. किसी को नाराज होने के बाद उसे क्षमा नहीं करते हैं।
2. बहुत सोच-समझकर स्थान परिवर्तन करते हैं
3. लोगों को परखे में कभी धोखा नहीं खाते हैं।
4. कुंडली में यदि वृष अच्छा हो तो जातक बुद्धिमान होते है।

नव संवत्सर 2069 व दशाधिकारी शुभाशुभ फल
दिनांक 23-03-2012 से 10-04-2013 तक

डा. (श्रीमती) कविता बंसल

ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद

प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ

मो.- 9897135686, 9219577131

भारत के महान प्रतापी सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, जिनके नाम से भारतीय संवत्सर की पहचान बनी, जो प्रत्येक चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है। प्राचीन ग्रंथो में उल्लिखित है कि जगत पिता ब्रह्ममाजी ने इसी तिथि को सूर्योदय के समय सृष्टि की रचना की थी तथा इसी दिन भगवान विष्णु ने मत्स्या अवतार धारण किया था। इसी तिथि से घट स्थापन के साथ नवरात्रि व्रत पूजन प्रारम्भ हो जाता है। नये विक्रम संवत्सर 2069 का प्रारम्भ शुक्रवार, चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा 23 मार्च, उत्तराभाद्र पद नक्षत्र से हो जायेगा। नव संवत का नाम विश्वावसु है, इस संवत्सर के स्वामी राहु है।

विश्वावसु संवत्सर फल- इस सम्वत में शासन प्रणालियों में अस्थिरता बनी रहती है। सरकार के सामने कई चुनौतिया आऐगी। वर्षा की मध्यता बनी रहेगी। शासको द्वारा अतिरिक्त कर भार व महंगाई के कारण जनता में आक्रोश बढेगा।

स्वामी राहु का फल-विश्वावसु संवत्सर का स्वामी होने से इस वर्ष वर्षा कम होती है, अनाज मँहगे होगें।

संक्रामक रोगों में वृद्धि होगी। विदेशी ताकतों व राजनैतिक साँठ गाँठ षडयन्त्रकारी नीतियों का पर्दाफाश होगा। आंतकवाद फिर अपना सिर उठायेगा। वैशाख मास, ज्येष्ठ मास में विग्रह होगा। आषाण में वर्षा कम व श्रावण, भाद्रपद मास में दुर्भिक्ष की स्थिति बनें। आश्विन में रोग पीड़ा, चौपायों में महँगाई तथा स्वर्ण इत्यादि धातुओं में मंदा आता है। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, और फाल्गुन के मासों में भावों में अस्थिरता की स्थिति रहेगी।

राजा मंत्री आदि विवरण

अथाडस्मिन्नवर्षे राजा शुक्रः। मत्री शुक्र सस्येशो चंद्रः। धान्येशो शनिः। मेघेशो गुरुः। रसेशो भौमः। नीरशेशो रविः। फलेशो गुरुः। धनेशो रविः। दुर्गेशो गुरुः। ऐते दशाधिकारिणः तत्रबर्हिस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्टिब्दानां मध्ये विष्णुर्विशतिकायां 19 वाँ विश्वावसुनाम सम्वत्सरः प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्कसमये गत मासादिः 11। 23।45।36 भोग्यमासादिः 0।6।14।24 विश्वेदेवदेवतं युगम। वर्षनाम आश्विनः। मेषनाम आवर्तः। रोहिणी निवासः पर्वते। समय निवासो कुम्भकारगृहे।

1. राजा शुक्र का फल-शुक्र राजा हो तो समयानुसार उचित वर्षा, कृषि कार्य में उन्नति होती है। पैदावार अच्छी होती है। पर्याप्त वर्षा के कारण नदी-नाले जल से परिपूर्ण होते है। फल-फूलों की पैदावार अच्छी होती है। दुधारु पशुओं में वृद्धि होती है। शासक वर्ग द्वारा कल्याणकारी, सुख सम्पन्नता वृद्धि हेतु प्रयास किये जाते है। विलासिता में वृद्धि होगी। समाज में स्त्रियों का मान सम्मान बढेगा।

2. मंत्री शुक्र का फल-मंत्री शुक्र हो तो खड़ी फसलों में टिड्डी, चूहा, कातर आदि जीवों से हानि हों। वर्षा अनुकूल होने से वाढ का भय होता है। खाधान्न के भावों में अस्थिरता रहेगी। किशमिश ,काजू, छुआरा, मेवा का उत्पादन बढ़ेगा। शहरी भागों में भय व आंतक की घटनाऐं होगी। वात, काम एवं यौन रोगों की अधिकता रहेगी।

3. सस्येश चन्द्र का फल-वर्षा श्रेष्ठ होने के कारण धन धान्य की वृद्धि होगी। दुधारु पशु दुग्ध प्रचुर मात्रा में देगें। प्रजा जन सुखी एवं शान्ति अनुभव करेगी। धर्म का प्रचार व प्रसार बढ़ेगा। ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि होगी। उत्पादकता बढ़ेगी।

4. धान्येश शनि का फल- शासनाधिकारी की लापरवाही व योजनाओं का पूर्ण लाभ न मिल पाने के कारण तथा वर्षा की कमी से शीतकालीन फसलों के पैदावार में कमी आऐगी। कृषक वर्ग में असंतोष की भावना पैदा होगी। मूगँ, मोठ, बाजरे की फसलों को नुकसान हों। प्रजा में भय, कलह, निर्धनता रोग एवं पीड़ा बढ़ेगी। कही युद्धादि का भय रहेगा।

5. मेघेश गुरु का फल-मेघेश गुरु हो तो वर्षा अच्छी होती है। रसदार फसलें अच्छी होती है। फल-फूल, सब्जी कन्दमूलादि की वृद्धि हो। सभी प्रकार के भोग विलास, सुख-सुविधओं में वृद्धि होगी। धार्मिक प्रचार प्रसार में वृद्धि होगी। शासक वर्ग जनता की अपेक्षाओं पर खरी उतरने की कोशिश करेंगे।

6. रसेश मंगल का फल-अपर्याप्त वर्षा से गेहूँ, अनाज, गुड, खांड, रसीले पदार्थ, फल, घी, तेल की कमी हो, महगांई बढे। शासको की त्रुटिपूर्ण नीतियों से जनता में आक्रोश, हिंसा, हडताल की

शेष पेज 18 **पर**.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262

वासन्तिक नवरात्रि व्रत

पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
फोन नं. 09811965774

चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक की तिथियाँ नवरात्रि के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें चैत्र का नवरात्र **'वासन्तिक नवरात्र'** और आश्विन का नवरात्र **'शारदीय नवरात्र'** कहलाता है। इनमें आद्याशक्ति जगत् जननी सिंह वाहिनी माँ भगवती की विशेष आराधना की जाती है।

यह नवरात्र स्त्री–पुरूष दोनों ही कर सकते है। यदि स्वयं न कर सके तो पति, पत्नी, पुत्र या ब्राहाण को प्रतिनिधि बनाकर व्रत पूर्ण कराया जा सकता है। व्रत में उपवास, अयाचित (बिना माँगे प्राप्त भोजन) नक्त (रात्रि में भोजन करना) या भुक्त (एक बार भोजन करना जो बन सके यथासामर्थ्य वह करे।

यदि नवरात्रों में घटस्थापन के बाद सूतक (अशौच) हो जाय तो कोई दोष नहीं लगता, परन्तु पहले हो जाय तो पूजनादि कृत स्वंय न करे। यदि अशौच का पहले से ही अनुभव हो रहा हो तो नान्दी श्राद्ध कराना लाभकारी रहेगा।

पूजा विधिः– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से पूजन प्रारम्भ होता है। सम्मुखी प्रतिपदा शुभकारी है। अतः वही ग्राहा है। अमायुक्त प्रतिपदा में पूजन नहीं करना चाहिए, परन्तु जहाँ प्रतिपदा तिथि का लोप हो रहा हो वहाँ अमायुक्त प्रतिपदा में भी शुभ समय विचार कर पूजन करना श्रेष्ठ है। सर्वप्रथम प्रातः काल स्वंय स्नानादि कृत्यों से पवित्र होकर निष्काम परक या कामनापरक संकल्प का गोमय से पूजा स्थान को लीपकर उसे पवित्र होकर निष्काम परक या कामनापरक संकल्प कर लेना चाहिए। पवित्र मिट्टी से वेदी का निर्माण करे, फिर उसमें जौ और गेहूँ बोए तथा उस पर यथाशक्ति मिट्टी, ताँबा, चाँदी या स्वर्ण का कलश स्थापित करें। यदि पूर्णविधि पूर्वक करना हो तो पंचांग पूजन (गणेशाम्बिका, वरूण, षोडशमातृका, सप्तघृतमात्का, नवग्रह आदि देवों का पूजन तथा पुण्यावाचन ब्राहण द्वारा करावे या स्वंय करे।

तदुपरान्त माँ जगदम्बा को सिंहासनारूढ़ कर षोडशोपचार पूजन (आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन स्नान, स्नानांग आचमन, दुग्ध स्नान, दधि–घृत–मधु–शर्करा स्नान, पंचामृत स्नान, गन्धोदक स्नान व शुद्धोदक स्नान, आचमन, वस्त्र, आचमन, सौभग्य सूत्र, चन्दन, हरिद्राचूर्ण, कुंकुम, सिंदूर, कज्जल, दूर्वांकुर, बिल्वपत्र, आभूषण, पुष्पमाला, नानपरिमल द्रव्य, सौभाग्य पेटिका, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ऋतुफल, ताम्बूल, दक्षिणा, आरती, प्रदक्षिणा, मन्त्र पुष्पांजलि, नमस्कार, क्षमा याचना अर्पण (ऊँ तत्सद् ब्रहार्पणमस्तु। विष्णवे नमः विष्णवे नमः विष्णवे नमः) करे। सामर्थ्यानुसार नित्य होम, श्री दुर्गा सप्तशती का सम्पुट या साधारण पाठ या माँ भगवती के लीला–चरित्रों का श्रवण या मंत्रों का विधिवत् व श्रद्धा युक्त होकर जाप करे। अखण्ड दीपक का भी विधान है।

कुमारी पूजनः– नवरात्र व्रत का अनिवार्य अंग कुमारी पूजन ही है। कुमारिकाएँ जगजननी माँ दुर्गा की प्रत्यक्ष विग्रह है। सामर्थ्य हो तो नौ दिन तक नौ अन्यथा सात, पाँच, तीन या एक कन्या को माँ दुर्गा स्वरूप मानकर पूजा करके भोजन कराना चाहिए। इसमें ब्राहाण कन्या को श्रेष्ठ माना गया है। आसन बिछाकर गणेश, बटुक तथा कुमारियों को एक पंक्ति में बिठाकर ऊँ गं गणपतये नमः से गणेश जी का ऊँ वं वटुकाय नमः से वटुक का तथा ऊँ कुमार्ये नमः से कुमारियों का क्रमशः पंचोपचार पूजन करे। इसके बाद हाथ में पुष्प लेकर निम्नांकित मंत्र से कुमारियों की प्रार्थना करें।

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्।।
जगत्पूज्ये जगद्वन्धे सर्वशक्ति स्वरूपपिणि।
पूजां ग्रहाण कौमरि जगन्मातर्नमोडस्तु ते।।

कहीं कहीं अष्टमी या नवमी के दिन या नित्यप्रति कड़ाही पूजा की भी परम्परा है। कड़ाही में हलवा, पूरी, पुआ आदि बनाकर उसे देवी जी को अर्पण किया जाता है। तत्पशचात् चमचे और कड़ाडी में मौली (कलावा) बाँध कर ऊँ अन्नपूर्णायै नमः इस नाम मंत्र से पंचोपचार पूजन करना चाहिए। पुनः कुमारी बालिकाओं का भोजन कराकर उन्हें यथाशक्ति वस्त्राभूषण दक्षिणादि देवे व ससम्मान विदा करे।

माँ भगवती की विशेष कृपा प्राप्ति हेतु षोडशोपचार पूजन के बाद

शेष पेज 17 **पर**.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

आपकी जन्म तिथि और आप

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

वैसे तो अक्सर अंको द्वारा देखा जाता है कि किस अंक या मूलांक वाला जातक कैसा होगा। पर हिन्दी तिथियों का भी बहुत महत्व होता है। पुराने समय में तो लोगों को अपनी जन्म तारीख भी नहीं पता होती थी पर उन्हें अपनी तिथि अच्छे से याद रहती थी तो आइये जानें कि क्याँ कहती है आपकी जन्म तिथि?

प्रतिपदा:–प्रतिपदा में जन्म लेने वाले तीक्ष्ण बुद्धि वाला, परिवार से स्नेह रखने वाला, देव भक्त होता हैं। अधिक धन खर्च करने वाला व मेहनती होता हैं।

द्वितीय:–द्वितीय में उत्पन्न परोपकारी, परस्त्री गामी, बंधन से डरने वाला, धनवान और मित्रों से मान पाने वाला होता है।

तृतीया:–तृतीया में जन्मा चिरंजीवी पुत्र–पौत्रों वाला वीर, साहसी और मनमानी करने वाला होता है।

चतुर्थी:–चतुर्थी में पैदा हुआ जातक विशाल हृदय वाला, मित्रों से प्रेम करने वाला, कामी, तर्क वितर्क करने वाला, धन और संन्तान वाला होता हैं।

पंचमी:–पंचमी में जन्म लेने वाला शुद्धचित्त, सत्यवादी, माता–पिता का भक्त, व्यवहार में निपुण, बहुविषयज्ञ, शास्त्रों को जानने वाला, धनी होता हैं।

षष्ठी:–षष्ठी में जन्में लोग विद्वान, देव भक्त, परिवार से स्नेह रखने वाला, पेट रोगी व देश–विदेश घूमने वाला होता है।

सप्तमी:–सप्तमी में उत्पन्न तेजस्वी, परोपकारी, धनवान, सन्तोषी, गुणवान, मित्रों में मान्य होता हैं।

अष्टमी:–अष्टमी में जन्मा सत्यवादी, धर्मात्मा, कार्य–कुशल, वीर, साहसी, पूजा–पाठ में आस्था रखने वाला, गुणवान व मनमानी करने वाला भोगी होता हैं।

नवमी:–नवमी को जन्म लेने वाला देव–भक्त, शास्त्रों में रूचि रखे वाला, धनवान, पुत्रवान, स्त्री में आसक्त, वाद–विवाद करने वाला होता हैं।

शेष पेज 22 **पर**.....

शिष्यों को शिष्टाचार

श्रीमती नूतन
ज्योतिष प्रभाकर
मो. 9720695096

गुरू व शिष्य का संबंध बहुत ही विशेष माना गया है। गुरू के बिना पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना संभव ही नही है। क्योकि पुस्तको से प्राप्त ज्ञान अधूरा ही रहता है उसमें प्रयोगात्मक ज्ञान व अनुभव नही मिल सकता वह ज्ञान श्रेष्ठ गुरू के सान्निध में ही प्राप्त होता है। परन्तु आज के समय में स्थितियां बहुत बदल गयी है। गुरू शिष्य की परम्परा कम होती जा रही है। यह संबंध सीमित समय के लिए धन देकर ज्ञान प्राप्त करना मात्र रह गया है। इसीलिए असफलता का चलन बढता ही जा रहा है। पूर्णता की कमी रह ही जाती है।

आदर्श गुरू (जो शिष्यो कों संतान की भाति समझने वाले) भारत वर्ष में आज भी कम नही है। जो कि शिष्यो को उन्नति के पथ पर अग्रसर होने में पूर्ण सहयोग देने के लिए तत्पर रहते है। गुरू अपने व्यवहारिक ज्ञान से अवगत कराके अपने अनुभव को साझा कर उन्नति की राह में आने वाली बाधाओं में फंसने से बचाता है।

ऐसे गुरू को प्राप्त करना कठिन या असम्भव नही बल्कि बड़ा ही सरल है। उनके लिए पूर्ण समर्पण भाव के साथ कुछ शिष्टाचार जो कि हमारे वेदों में शिष्यों के लिए आवशयक बतायें गये है। उन्हे जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। जैसेः–

1. **न साम्मुख्ये गुरोः स्थेयं राज्ञः श्रेष्ठस्य कस्यचित् अर्थातः** गुरु राजा व श्रेष्ठ पुरूषों के समाने बिना अनुमति के नहीं बैठना चाहिए।

2. **गुरोरे का सनादनम् अर्थात्**ः गुरु के साथ एक ही आसन पर शिष्य को कभी नहीं बैंठना चाहिए।

3. **शय्यासने चाऽऽ चरिते नाविशेत् अर्थात्**:जिस आसन पर गुरु बैठते हो उस पर शिष्य को नहीं बैठना चाहिए व ना ही गुरु की शय्या जिस पर गुरु शयन करें उसका उपयोग करना चाहिए।

शेष पेज 20 **पर**.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

''रसोई के ऊपर या नीचे सोना कष्टकारी''

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ
फोन. 9412257617, 8126732115

ये तो आप जानते ही हैं कि घर के आग्नेय कोण में ही रसोईघर होना चाहिए। लेकिन इतने भर से घर वास्तु दोष से मुक्त है–यह मान लेना खतरनाक हो सकता है। क्योंकि आज कल के दो मंजिला मकान हो या बहुमंजली इमारतें एवं डुपलेक्स फ्लैंट में यह अक्सर देखा गया है कि किसी का शयनकक्ष या आफिस या तो रसोई घर के ऊपर है या फिर नीचे। वास्तु की दृष्टि में घर में अग्नि स्थापन रसोई में होता है और यह सबसे महत्वपूर्ण बात है कि जहां पर कुछ वर्षो से रसोई पक रही हो, अग्नि जल रही हो वहां पर निश्चित ही वातावरण आग्नेय मण्डल के प्रभाव में होगा। रसोई में अग्नि स्थापन जितना पुराना होता जाता है उतना ही आग्नेय मण्डल अपना घनत्व बढ़ाता जाता है। इसका प्रभाव धीरे–धीरे ऊपर तथा नीचे मंजिलों पर पड़ने लगता है। और परिणाम यह होता है कि यदि रसोई के ऊपर या नीचे कोई अपना शयन कक्ष अथवा ऑफिस बना ले तो यह निश्चित है कि उसे इस आग्नेय मण्डल के कुप्रभाव झेलने ही पड़ेगें।

आफिस में क्रोध अधिक आएगा–रसोई घर के ऊपर या नीचे ऑफिस बनाने पर लोगों को अत्यंत तनाव का सामना करना पड़ता है। ऑफिस में बैठने वाले प्रमुख व्यक्ति को क्रोध अधिक आता है। यदि रसोई बहुत पुरानी है तो ऑफिस के कर्मचारियों में आपसी कटुता अधिक रही है और बात–बातपर लोगों में झगड़ा भी हो सकता है। मैंने अक्सर देखा है कि अग्नि स्थापन के ऊपर सोना या ऑफिस बनाना अत्यन्त कष्टकारी परिणाम देता है।

इसका कारण सिर्फ यह है कि अग्नि स्थापन के नीचे या ऊपर अत्यन्त विकसित ऊर्जा का क्षेत्र प्रभावी होता है।

गलत बेड रुम से अनिद्रा:–वहीं अगर रसोई के ऊपर या नीचे बेड रुम है तो सुख बाधित होने लगता है। बेड रुम में सोने वाले को सुखद नींद नहीं आएगी अकारण क्रोध आने लगेगा। इसके अलावा सिर दर्द, माइग्रेन या फिर सिर भारी चोट या ब्रेन हैमरेंज तक हो सकता है। एक बात और ध्यान देनी चाहिए कि रसोई अगर बेड रुम में जुड़ी होगी और दरवाजा अगर बेड रुम से जुड़ी होगी या उसमें दरवाजा बेड रुम के अन्दर से हो तो यह भी दुर्घटना कारक है। कहने का तात्पर्य यह है कि अग्नि का प्रभाव बेड रुम तक धीरे–धीरे आने लगता है। अधिक समय तक इस क्षेत्र में निवास करने पर उच्च रक्त चाप, स्नायु दुर्बलता, अनिद्रा, पारिवारिक क्लेश निर्णय क्षमता में कमी, पित्त की अधिकता धन हानि आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

उपाय:–उपरोक्त वास्तु दोषों को हम वास्तु सम्मत एवं कुछ ज्योतिष उपायों से काफी हद तक दूर कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संम्पर्क करें।

❋❋❋

अंक विद्या और आपका भाग्य

श्रीमती पूनम अजय दत्ता
मो. 9319221203

आजकल विदेशों व भारत में भी अंक विद्या बहुत अधिक प्रचलित है। भारत में पुराने विद्वानों को भी इस विद्या का बहुत अच्छी तरह अभ्यास था। मगर पहले यह विद्या संस्कृत व हिन्दी जानने वाले ही जानते थे इसलिए यह विद्या ज्यादा प्रचलित नहीं हो सकी। अंकों से मनुष्य के जिस्मानी व बाहरी निशानियां बताई जा सकती हैं, मगर हमारे विचार से ज्योतिष में जन्मपत्री की तरह आने वाली घटनायें ठीक से नहीं बताई जा सकतीं। यहां पर अंग्रेजी तारीखों की जन्म तारीख के अनुसार 1 से 9 तक के मूल अंकों की कल्पना की गई है व सूर्य आदि नौ ग्रहों को इन मूल अंकों का अधिकारी माना गया है। 9 के बाद की तारीखों के मूल अंक बनाने का तरीका इस प्रकार है।

10=1+0=1, 11=1+1=2, 12=1+2=3, 13=1+3=4, 14=1+4=5, 15=1+5=61

क्रमशः इसी प्रकार तारीखों की दोनों अंकों की इकाईयों को जोड़कर मूल अंक बनाएं, अथवा किसी भी अभीष्ट संख्या को नौ से भाग देकर जो शेष बचे वही मूल अंक होगा।

मूल अंक 1 वाले व्यक्ति– ऐसे व्यक्ति स्थिर प्रकृति वाले, क्रियात्मक, स्वतंत्र विचार वाले, स्वाभिमानी होते हैं। अंधिकार प्रदर्शन की भावना भी रहती है। किसी अन्य व्यक्ति के प्रभाव व अनुशासन सहन नहीं करते हैं। अंक 1 वालों को रविवार तथा सोमवार शुभ होते हैं। पीला व सुनहरी रंग विशेष अनुकूल होते हैं। जीवन के 13, 19, 22, 28, 39, 49, 58 वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। इस अंक का प्रतीक सूर्य ग्रह है। ऐसे व्यक्तियों के नेत्र, कंठ, रक्त, पित्त विकार आदि का भय होता है, माणिक्य धारण करना शुभ है।

मूल अंक 2 वाले व्यक्ति– इस अंक का प्रतीत ग्रह चंद्रमा है। ये 1 अंक वाले व्यक्तियों की अपेक्षा शान्त स्वभाव वाले होते हैं। कल्पना, साहित्य प्रेम, चंचल प्रवृत्ति वाला व सौंदर्य प्रेमी, लेखन कार्य करने में रूचि इनके स्वाभाविक गुण हैं। सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार शुभ हैं। यह निश्चयी कम होते हैं। जीवन के 15, 31, 34, 37वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण है, श्वेत रंग का अनुकूल है।

मूल अंक 3 वाले व्यक्ति– अनुशासन प्रिय, महत्वकांक्षी, विद्याध्ययनी तथा परिश्रमी होते हैं। नेतृत्व करने में कुशल होते हैं। बृहस्पति प्रतिनिधि ग्रह है। इनके लिए मंगलवार, शुक्रवार, रविवार

शेष पेज 20 **पर**.....

ग्रह के बदले रुप को पहिचाने

पं. आर. एस. द्विवेदी
फोन नं. 9815102308

ज्योतिषशास्त्र में बारह राशि और नौ ग्रह को मान्यता दिया है प्रत्येक ग्रह का सवभाव एवं कारक अलग–अलग होता है इस प्रकार प्रत्येक राशि का स्वभाव एवं कारक भी अलग–अलग होता है जन्म कुण्डली में बारह (घर) भाव भी होते हैं प्रथम भाव में कोई भी राशि आयें मेरे हिसाब से वह राशि प्रथम स्थान में होने से मनुष्य के सिर के बारे में बतायेगी। जन्म कुण्डली में मेष राशि भी मनुष्य के सिर के बारे में भी बताती है इस प्रकार प्रथम घर अर्थात् लगन में कोई राशि आती है अपने सवभाव के अतिरिक्त मेष राशि से भी प्रभावित होती है इसी प्रकार दूसरी राशि वृष मनुष्य के मुँह के बारेमें बताती है उसी प्रकार जन्म कुण्डली में दूसरा भाव (घर) भी मनुष्य के मुँह और परिवार के बारे में बताती है जब कोई ग्रह इन राशियों में या जन्म कुण्डली के इन भावों में बैठ जाता हैं तब अपना स्वरुप बहुत प्रतिशत बदल लेता है इस कारण जब किसी ग्रह की महादशा/अन्तरदशा चलती है तब वह ग्रह जिन चीजों का कारक है वैसे फल करेगा और जिसके राशि और नक्षत्र में बैठकर अपना स्वभाव बदल लिया है उसका फल करेगा। जन्म कुण्डली में ग्रह कि राशि जिस घर में पड़ती है वैसा ग्रह भी अपना रुप बदल लेता है और जो भी ग्रह उसके राशि और नक्षत्र में बैठा होता है उसका भी प्रभाव होता है। नीचे सभी राशियों के विशेष गुण लिख रहा हूँ जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस राशि में होता है या लग्नेश जिस राशि में बैठा होता है उन दोनों का प्रभाव जातक के ऊपर होता है। किसी भी व्यवसाय या काम काज या परिस्थिति जानने के लिऐ एक नहीं कई चीजों का प्रभाव होता है जैसे अगर कोई व्यक्ति अध्यापक की नौकरी करता है तब उसके कुण्डली में बुध गुरु की स्थिति अच्छी होती है बुध के साथ में पंचम में सिंह राशि नवम गुरु की धनु राशि का भी प्रभाव होता है। अगर कोई व्यक्ति पर पंचमेश एवं नवमेश का प्रभाव होता है। अगर कोई व्यक्ति बैंक में नौकरी करता है। तब उसके कुण्डली में बुध और गुरु के साथ दूसरी राशि वृष और ग्यारहवीं राशि कुम्भ या दुसरा और ग्यारहवा स्थान अजीविका में अपना प्रभाव डाल रहा है। अगर कोई व्यक्ति वकील बनता है तब उसके कुण्डली में गुरु और शुक्र का प्रभाव होता है साथ में लग्न दूसरा घर ,छठा घर और सप्तम घर भी प्रभावित है क्योंकि दुसरा घर जातक का मुँह होता है वकील बातचीत करके पैसा कमाता है छठा घर झगडा या विवादित व्यक्ति का होता है तुला राशि न्याय कि राशि होती है सातवा घर विवाद एवं मुकदमें का भी होता है गुरु और शुक्र को ज्ञान विद्या और और आर्चाय की संज्ञा दी गई है।

अगर कोई व्यक्ति पुलिस में नौकरी करता है तब उसके कुण्डली में सूर्य और मंगल बलवान होता है क्योंकि सूर्य मंगल क्षत्रिय जाति का ग्रह हैं। जन्म कुण्डली में तीसरा और छठा भी अजीविका के ऊपर अपना प्रभाव डाल रहा है जन्म कुण्डली में तीसरे और छठे घर में काल पुरुष की राशि मिथुन और कन्या आती है तीसरे पुरुषार्थ हिम्मत हौसला देखा जाता है छठा घर झगड़ा लडाई शत्रु प्रतियोंगिता तथा मजदूर होंकर काम को करना माना गया है इस लिये इन दोनों घरों का कारक मंगल ग्रह को माना गया है। सरकारी नौकरी में राहु केतु की भी भूमिका होती है क्योंकि राहु–केतु व्यक्ति की बदली करवाता है तथा शरारती अपराधी लोगों का सम्बन्ध राहु से होता है। तथा केतु को पड़यन्त्रकारी ग्रह माना गया है जब दो ग्रह मिलते है तब एक योग बनता है एक राशि के अन्दर भी नक्षत्रों का अलग भाव अलग प्रभाव होता है जैसे मेष राशि के अर्न्तगत अश्वनी भरणी के चारों चरण कृतिका का प्रथम चरण आता है इस प्रकार एक राशि के अन्दर भी नक्षत्र का योग होता है अगर नवांश कुण्डली देखे तक एक राशि से नौ नवांश बनता है और सभी नवांश के अलग–अलग फल होते है। जहाँ पर लग्न में उदय होने वाले नक्षत्र का प्रभाव होता है वहां पर उस नक्षत्र का स्वामी जन्म कुण्डली में किस जगह बैठा है उसका भी प्रभाव होता है जैसे इस कुण्डली को देखे।

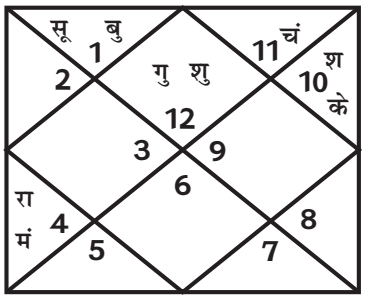

इस जन्म कुण्डली मीन लग्न उदय हो रही है (21/4/1963) जिसका स्वामी लग्न में बैठा है लग्न में रेवती नक्षत्र उदय हो रहा है जिसका स्वामी बुद्ध ग्रह दूसरे घर में बैठा है जन्म कुण्डली में चन्द्रमा गुरु के पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में बैठा है इस प्रकार बुध और गुरु का प्रभाव है बुध और गुरु का संबंध होने से जातक की पढ़ाई अच्छी है और जातक धन (वित्त) विभाग में नौकरी करता है इस कुण्डली में मंगल धन और भाग्य स्थान का स्वामी होकर पंचम घर में बैठा है बुध मंगल के मेष राशि बैठा है और नवांश कुण्डली में मंगल धनु राशि में बैठा है बुध अपनी महादशा में मंगल का फल किया है जैसे बुध की महादशा में जातक के पास दो लड़के सन्तान का जन्म हुआ है अच्छी नौकरी लगी। इस प्रकार ग्रह अपना रुप बदल लेता है। और अच्छे ज्योतिषी को गहराई में जाकर मन्थन करना चाहिए। ❋ ❋ ❋

शेष पेज 23 **पर**.....

विवाह में आने वाली समस्याएं व उनके उपाय

डॉ. श्रीमती रेखा जैन 'आस्था'
ज्योतिष प्रभाकर वास्तु शास्त्राचार्य
दूरभाष–0562–3250546

संतान के युवावस्था में प्रवेश करते ही माता–पिता उसके विवाह एवं भविष्य के लिए चिंतित हो जाते है। अनेकों युवक व युवतियों का जब तक विवाह का समय नहीं आ जाता तक वह कई व्यवधान आते है। या तो रिश्ते नहीं आते और यदि आते है तो पसन्द नहीं आते सम्बन्ध होने के बाद टूट जाते है या रिश्ते में दरार पड़ जाती है। या रिश्ते गलतफहमी के शिकार हो जाते हैं।

आपने ऐसे अनेकों युवक युवती देखे होगें जिनसे विवाह करने को कोई तैयार नहीं होता और कुछ युवक युवती ऐसे होते है जिनसे हर कोई विवाह करने को तैयार हो जाता है। किन्तु फिर भी उनका विवाह नहीं होता। हर तरह से सक्षम युवक–युवती का भी विवाह अगर नहीं हो रहा है तो इसे विधि का ही खेल समझना चाहिए। ऐसे लोगों के विवाह में कुछ विशेष कारणों से परेशानी आती है। ऐसे में माता–पिता को किसी विद्धान ज्योतिषी से संपर्क करे और उन कारणों का पता लगाए जिन कारणों से विवाह में समस्याए आ रही है। तद उपरान्त उनका उपाय भी अवश्य करें। जिससे उचित समय पर विवाह सम्पन्न हो सकें।

सर्वप्रथम आप किसी अच्छे ज्योतिषी से अपनी जन्म पत्रिका दिखवाएं विवाह में अडचन पैदा करने वाले ग्रहों को जाने और उपाय करें। यदि आप युवक है। तो आप को विवाह कारक ग्रह शुक्र है। यदि आप का विवाह समय से नहीं हो रहा तो समझे कि आपका शुक्र कमजोर है। इसके लिए आप शुक्ल पक्ष के सिकी शुभ सिद्धि योग वाले शुक्रवार का चयन करके, सायंकाल स्नान करके स्वच्छ बस्त्र धारण करके एक नारियल का गोला लें उसमें एक छेद करे फिर उसमें गाय का घी और बूरा पूरा भर दें और सिर से बन्द कर दे फिर किसी सुनसान जगह पर गड्डा खोद कर अपने सिर पर से सात बार उसारे और उस गोले को गड्डे में डाल दें। और ऊपर से कुछ बूरा भी डालें। फिर बिना पीछे मुडे घर आ जायें। घर आ कर हाथ मुँह धोले। इस प्रयोग को आप शुक्रवार से प्रारम्भ कर 43 दिन तक पूर्ण श्रद्धा व विश्वास से करे अतिशीघ्र विवाह हो जायेगा।

यदि आप युवती है तो आपके विवाह का प्रमुख कारक ग्रह गुरु है यदि आपका विवाह अनेकों कोशिशों के उपरान्त भी सम्पन्न नहीं हो रहा तो समझे आप का गुरु कमजोर या पीड़ित है। इसके आप गुरुवार को स्नान द्वारा पवित्र होकर स्वच्छ बस्त्र धारण करके एक पीले कपड़ें में सवा किलों गुड़, सवाकिलों चने की दाल केसर, हल्दी की सात गाठे रखकर किसी ब्राह्मण को दान करे। उसे भोजन कराये व दक्षिणा भी दें। और फिर 43 दिन तक लगातार सांयकाल को गुड़ केसर चने की दाल अपने ऊपर से सात वार उसार कर गाय को खिलाएं और केसर का तिलक लगाए।

दाम्पत्य जीवन तभी सुखद रहता है जब मनोनुकूल जीवन साथी की प्राप्ति हो। इसके लिए गौरी शंकर रुद्राक्ष धारण करें। इसमें शिव के साथ पार्वती जी भी शक्ति शामिल रहती है। इस रुद्राक्ष को पीले धागे में विवाह योग्य व्यक्ति या इच्छित जीवन साथी प्राप्त करने वाले अवश्य धारण करें। इसे युवक शुभ योग वाले शुक्रवार को और युवती शुभ योग वाले गुरुवार को शिव शक्ति का ध्यान करते हुए पंचाक्षर मंत्र का जाप करके धारण करें। धारण करने से पूर्व इसे गंगाजल में धोकर धूप दीप अवश्य दिखाए। आपको अति शीघ्र इच्छित जीवन साथी प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त विवाह योग व्यक्ति या जिनके विवाह में बाधाएं आ रही है। यह उपाय शुभ मुहूर्त में स्नान आदि करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें। फिर एक जटा वाला सूखा नारियल ले पैर के अंगूठे से सिर की चोटी तक की लम्बाई के बराबर मौली ले और इस मौली को नारियल पर लपेटे फिर इसे लाल कपड़े में लपेटे। इस पर सात कुमकुम की बिन्दी लगाए फिर इसे कुल देवी के चरणों में अर्पित करें। और पूर्ण श्रद्धा से अपने विवाह की कामना करें। कुल देवी आपकी इच्छा अवश्य पूर्ण करेंगी। आपका विवाह शीघ्र हो जायेगा।

इसके अतिरिक्त किसी युवक व युवती के विवाह में विलम्ब शनि एवं राहु के कारण भी होता है। क्योंकि यह माना जाता है कि जिस

शेष पेज 22 **पर**.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

16 अप्रैल - 15 मई

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में मन परेशान रहेगा। सन्तानपक्ष से चिन्तायें लगी रहेगी। प्रियजनों से मेल-जोल बढ़ेगा। आर्थिक लाभ होगा। कारोबार उत्तम रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। मास के अन्त में विशेष खर्च होने की संभावना रहेगी। जायदाद संबंधित विवाद उत्पन्न होंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति बनेगी। कारोबार में अधिक बदलाव होने की संभावना रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में उदर विकार जैसे रोग से आप ग्रस्त रहेंगे। योजनायें असफल होंगी। व्यय अधिक रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। नौकरी में हानि होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में आपको प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। यात्रा का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में मुकदमें में हानि होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट एवं कारोबार में रुकावटें आयेगी। शत्रुओं पर हावी रहेंगे। मास के अन्त में कारोबार ठीक होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी। सारी योजनायें असफल रहेंगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। वायु विकार, नेत्र कष्ट जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। कारोबार ठीक चलेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में बदलाव अधिक आने की संभावना रहेगी। आर्थिक हानि होगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में नेत्र कष्ट, वायु विकार, जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। चोट भी लग सकती है। यात्रा में कष्ट आयेंगे। अर्थलाभ की प्राप्ति होगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। व्यय अधिक रहेगा। शत्रु आप पर हावी रहेंगे। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- पत्नि से मन-मुटाव होने की संभावना रहेगी। व्यय अधिक रहेगा। इस मास में शारीरिक कष्ट रहेगा। मानसिक तनाव रहेगा। कारोबार में रुकावटें आयेंगी एवं हानि होना भी संभव है। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अप्रैल	मई
16 वरुथिनी एका. व्रत	**1** विश्व मजदूर दिवस
18 प्रदोष व्रत	**2** मोहिनी एकादशी व्रत
21 अमावस्या (स्नान/दान)	**3** प्रदोष व्रत, श्री नरसिंह जं. **5** पूर्णिमा व्रत
24 श्री परशुराम जं. (अक्षय तीज)	**6** बुद्ध पूर्णिमा
25 श्री विनायक चौथ	**7** रविन्द्र नाथ टैगोर जं.
26 श्री आद्य शंकराचार्य जं.	**9** श्री गणेश चतुर्थी व्रत
27 श्री रामानुजाचार्य जं.	**13** शीतलाष्टमी पूजन
29 दुर्गाष्टमी (श्री बगलामुखी जं.) **30** सीता नवमी	

ग्रहारम्भ मुहूर्त
अप्रैल–18
मई– 3, 4
गृह प्रवेश मुहूर्त
अप्रैल– नही है
मई– 3, 4,
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
अप्रैल – 29
मई –2, 3, 4
नामकरण संस्कार मुहूर्त
अप्रैल–नही है
मई– 4, 7

सर्वार्थ सिद्ध योग

अप्रैल	मई
17 ता. सू.उ. से 15:48 तक	04 ता. सू.उ. से 30:27 तक
20 ता. 7:55 से सू.उ. तक	09 ता. 10:19 से सू.उ. तक
21 ता. सू.उ. से 30:16 तक	10 ता. 10:03 से सू.उ. तक
24 ता. 5:47 से सू.उ. तक	
25 ता. 7:13 से सू.उ. तक	

16 मई - 15 जून

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। संबध में या रिश्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। क्रोध मे निरन्तर वृद्धि होगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा। शत्रु पक्ष आप पर हावी रहेंगें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास मे रक्त-पितर जैसे रोगो से आप ग्रस्त रहेंगे। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको प्रियजनो का सुख एवं साथ मिलेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में आपका शारीरिक स्वास्थ्य खराब रहने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। कारोंबार या व्यवसाय व नोकरी में भी कुछ रूकावटे उतपन्न होंगी। आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। आपको अपनो का सहयोग मिलेगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। आपका कारोबार ठीक ठीक चलेगाा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई-नई योजानओं से लाभ की प्राप्ति होगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। घरेलू परेशानियों की वृद्धि होगी। प्रियजनों मे से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– वृथाविवाद से दूर रहें। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा। आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होगा परन्तु किर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। मास के अन्त मे अच्छा लाभ प्राप्त होगा। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। कारोबार,व्यवसाय ठीक चलेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– घरेलू परेशानिया भी लगी रहेंगी। इस मास मे आर्थिक होने की संभावना रहेगी। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानिया निरन्तर बढ़ेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में पित्तविकार रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस मास में आपको मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगें। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मई	जून
16 अचला (अपरा) एकादशी व्रत **18** प्रदोष व्रत **20** अमावस्या, वट सावित्री व्रत पूजन **21** राजीव गांधी पुण्य ति. **23** रम्भा तीज व्रत **24** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **27** स्कन्द षष्ठी, पं. नेहरू पुण्य दिवस **28** भानु सप्तमी **29** दुर्गाष्टमी (धूमावती जं.) **30** माहेश्वरी नवमी **31** गंगा दशहरा,निर्जला एका. व्रत	**2** प्रदोष व्रत **3** पूर्णिमा व्रत **4** पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत, संत कवीरदास जं. **5** हरगोविन्द सिंह जं. **11** शीतलाष्टमी (सीताष्टमी) व्रत **15** योगिनी एकादशी व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त
मई – 26, 31
जून – 1, 4
गृह प्रवेश मुहूर्त
मई – 26, 31
जून – 1, 4
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
मई – 31
जून – 1, 4
नामकरण संस्कार मुहूर्त
मई – 18, 31
जून – 1, 4, 7, 15

सर्वार्थ सिद्ध योग

मई	जून
18 ता. सू.उ से 16:40 तक	01 ता. सू.उ. से सू.उ. तक
22 ता. सू.उ. से 15:36 तक	06 ता. सू.उ. से 15:26 तक
23 ता. सू.उ. से 17:07 तक	07 ता. सू.उ. से 14:42 तक
31 ता. 11:22 से सू.उ. तक	

'लोभी नाई'

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

"जो कुछ किसी ने पुण्य से प्राप्त किया है वह सब मुझे भी मिल जाए, यह लोभ मनुष्य को दु:खी करता है।"

चकवे ने अपनी कथा इस प्रकार आरम्भ की अयोध्या नगरी में चूड़ामणि नाम का एक क्षत्रिय रहता था। उसका परिवार बड़ा था और कमाने वाला वह केवल अकेला व्यक्ति था जिससे घर में प्रायः भूखों मरने की नौबत आ जाया करती थी। वह बड़ा परेशान रहा करता था। उसकी पत्नी भी अपने बच्चों को भूखा नहीं देख पाती थी, उसे हमेशा बच्चों की भूख की चिन्ता सताती रहती थी।

चूड़ामणि कभी किसी का काम करके उसके बदले में भोज्य पदार्थ लाकर अपने परिवार का पेट पालता था।

चूड़ामणि को हमेशा धन का अभाव खटकता रहा करता था। वह भगवान से यही प्रार्थना करता था। कि भगवान उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ले।

वह दिन–रात बस यही सोचता रहता था– "धन.....धन.....धन।" उसने एक दिन अपनी पत्नी से परामर्श किया कि वह क्या करें?

पत्नी ने भी बड़े सोच–समझकर अपने पतिदेव को एक सुझाव दिया–"आप किसी अच्छे महात्मा से इसका सुझाव लें तो अधिक अच्छा रहेगा–सुना है कि दुआओं से भाग्य बदल जाता है। मेरी तो यही राय है कि आप किसी महात्मा से इसका परामर्श करें और उसके बताए रास्ते पर चलें–हो सकता है वह भी आपके लिए कुछ दुआ करें और आपके साथ–साथ हमारा भी भाग्य बदल जाए, हमें भी दो वक्त की रोटी समय पर मिलने लगें।

पत्नी का परामर्श सुनकर चूड़ामणि के दिमाग में बात भर गई। वह अपने एक पुराने जानकार साधु के पास पहुँचा। उसे अपना सारा हाल सुनाया।

साधु ने उसकी बात सुनकर पहले बहुत कुछ सोचा–विचारा और अंत में अपने तजुर्बे से चूडामणि को एक सुझाव दिया, "चूडामणि तुम भगवान की तपस्या करना प्रारम्भ कर दो–ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारी दशा सुधरनी शुरु हो जाएगी।"

चूड़ामणि ने साधु की बात सुनी और अपने घर आया। घर आकर अपनी पत्नी से सारा हाल बताया।

पत्नी ने कहा, "हे प्राणप्यारे! तुम साधु की बात पर अमल करो और जैसा उसने कहा तुम वैसा ही करो।"

"हे प्राणप्यारी! साधु महाराज ने कहा है कि मैं स्वयं किसी पर्वत पर जाकर भगवान शंकर की उपासना करुं।" चूड़ामणि ने पत्नी से कहा।

"तो आप अवश्य किसी पर्वत पर जाकर भगवान शंकर की उपासना करो। हो सकता है, भगवान आपकी उपासना से प्रसन्न होकर हम पर अपी दयादृष्टि की कृपा कर दें और हम भी अपने बच्चों में सुखी–सुखी जीवन बिताएं।" पत्नी ने पुनः कहा।

"चला तो मैं जाऊं, परन्तु तुम्हारी और बच्चों की जुदाई की जब मैं सोचता हूं तो मेरा रोम–रोम खड़े हो जाता है, मेरी आत्मा मुझे आज्ञा नहीं दे पाएगी कि मैं तुम सबको अकेला छोड़कर पर्वत पर जाकर तपस्या करुं। " चूडामणि रोआंसा–सा मुंह बनाकर अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश कर रहा था। उसके मन में शंका उत्पन्न हो रही थी कि कहीं उसकी पत्नी उसकी जुदाई से परेशान न हो जाए, परन्तु ऐसा नहीं था। उसकी पत्नी भी चाहती थी। कि वह तपस्या करे और उसकी तपस्या का प्रतिफल कुछ हम तक भी आए जिससे कि उसके बच्चे भी पेट की आग से छुटकारा पा सके।

पति की बात सुनकर चूड़ामणि की पत्नी ने उसे पर्वत पर जाकर तपस्या करने को प्रेरित किया– "आप किसी पर्वत पर जाइये और भगवान शंकर की तपस्या कीजिएए। हम पर जो गुजरेगी उसे हम स्वयं भुगत लेंगे।"

चूड़ामणि पत्नी से इन्हीं शब्दों को सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था? अब उसने धनप्राप्ति की अभिलाषा से भगवान शंकर की तपस्या करके धन प्राप्त करने का निश्चय किया।

यह निश्चय करके वह एक पर्वत पर चला गया और भगवान शंकर की उपासना करने लगा।

जब कई दिन चूड़ामणि ने भगवान शंकर की उपासना की–वह भूखा–प्यासा भोले शंकर का जाप करता रहा, तो एक दिन भगवान उसकी तपस्या से प्रसन्न हो गए और उन्होंने स्वप्न में उससे कहा, "चूड़ामणि! मैं तेरी इस कठोर तपस्या से प्रसन्न हूं, तुझे धन की अभिलाषा है तो तू घर जाकर कल सवेरे किसी नाई को बुलाकर

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

पहले अपने बाल कटवाना और फिर अपने हाथ में एक लाठी लेकर अपने बाहरी दरवाजे के किवाड़ों के पीछे छुपकर खड़े हो जाना।"

भगवान ने आगे बताया–"फिर तेरे घर एक भिखारी आएगा, जब वह तेरे घर के आंगन में प्रवेश कर जाए, तब जू उसे अपनी लाठी से मारना। तेरी इस पिटाई से वह भिखारी एक स्वर्ण–कलश बन जाएगा। उस कलश से तुम अपनी जीविका का प्रबन्ध कर सकते हो।"

चूड़ामणि स्वप्न से जागा तो उसने अपने आपको उसी स्थान पर पाया जहां वह कई दिनों से अपनी तपस्या में मग्न भोले शंकर की उपासना कर रहा था। वह भोले शंकर को स्वप्न में देखकर तथा उनके वचन सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसकी सारी बातों को स्वयं दोहराने लगा। वह सोच रहा था कि भगवान ने स्वयं प्रकट होकर मुझे युक्ति बतायी है–"चूड़ामणि तू धन्य है और हर वह व्यक्ति धन्य है जिसे भगवान स्वयं दर्शन दें।" चूड़ामणि को घर से–बच्चों से जुदा हुए कई दिन हो गए थे, उसका मन भी अपने बीवी–बच्चों को देखने के लिए कर रहा था।

वह पर्वत से उतरकर अपने घर की राह लेता हुआ चल दिया। घर पहुंचकर अगली सुबह चूड़ामणि ने एक नाई को बुलाया और अपने बाल काटने का ओदश दिया।

नाई ने आदेश पाकर चूड़ामणि के बाल काटने आरम्भ किये। बाल कटवाकर वह भगवान भोले शंकर के बताये अनुसार अपनी लाठी हाथ में लेकर अपने मुख्यद्वार के किवाड़ के पीछे छुप गया। कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद में चूडामणि के घर में एक भिखारी आया और वह उसके आंगन तक ही पहुच गया। चूड़ामणि तो इसकी प्रतीक्षा कर ही रहा था–उसने तुरन्त उस भिखारी को लाठी से पीटना आरम्भ कर दिया। भिखारी पिटते–पिटते मणि–रत्नों से भरे स्वर्ण–कलश में बदल गया। नाई उस समय तक वहीं था–वह देखना चाहता था कि जिस व्यक्ति ने आज तक कभी अपने बाल समय से नहीं कटवाए वह आज उसे अपने घर बुलाकर बाल कटवा रहा था, इसका क्या कारण हो सकता है? कारण उसकी आंखों के सामने था। वह भिखारी को पिटते देख रह था। और भिखारी अपनी पिटाई के प्रत्युत्तर में कुछ भी नहीं कर रहा था और अन्त में जब उसने उसी भिखारी को एक स्वर्णकलश में बदलते देखा तो उसकी आंखें चकाचौंध हो गयीं–वह सोचने लगा– धन पाने की तो यह बहुत आसान तरकीब है। वह स्वयं भी चूड़ामणि की तरह से किसी भिखारी को पीटकर स्वर्ण–कलश प्राप्त करने की सोचने लगा–अगले दिन सवेरे वह भी एक डण्डा हाथ में लेकर अपने मुख्य द्वार के किवाड के पीछे खड़ा हो गया। भाग्यवश उस दिन कोई भिखारी उसके द्वार पर नहीं आया। शेष अगले क्रमांक में..... ❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे.....

है। अंकशास्त्र के अनुसार किसी व्यक्ति के नाम व जन्मतिथि को आधार मानकर उसके बारे में काफी कुछ जाना जा सकता है। आपकी जन्मतिथि के अंकों का जोड़ और आपके नाम में अंग्रेजी वर्णमाला में प्रयुक्त किए गए वर्णों के अंको का जोड़ आपके व्यक्तित्व का आइना होता है। यह आपके व्यक्तित्व और प्रारब्ध का आधार होता है। यही वजह है कि अंकशास्त्र को आज दुनिया भर में मान्यता मिली है। लोग इस पर निर्भर होने लगे हैं और इसको आधार मानकर अपने व्यापार, बच्चों आदि का नाम रखने लगे हैं। इसके आधार पर कुछ लोग नाम बदलकर सफलता भी प्राप्त कर रहे है।

❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे.....

नियमानुसार नैवेद्य के रूप में प्रतिपदा तिथि में गाय का घृत माँ को अर्पण करना चाहिए एंव फिर वह घृत ब्राहण को दे देना चाहिए। इसके फलस्वरूप मनुष्य कभी रोगी नहीं हो सकता। द्वितीया तिथि को पूजन करके भगवती जगदम्बा को चीनी का भोग लगाबे और ब्राहण को दें दे। यों करने से मनुष्य दीर्घायु होता है। तृतीया के दिन भगवती की पूजा में दूध की प्रधानता होनी चाहिए एंव पूजनोपरान्त वह दूध ब्राहण को दे देना उचित है। यह सम्पुर्ण दुःखों से मुक्त होने का एक परम साधन है। चतुर्थी के दिन मालपुआ का नैवेध अर्पण किया जाय और फिर वह योग्य ब्राहण को दे दिया जाय। इस अपूर्व दान मात्र से ही किसी प्रकार के विघ्न सामने नहीं आ सकते। पंचमी तिथि के दिन पूजा करके भगवती को केला का भोग लगावे और वह प्रसाद ब्राहण को देदें ऐसा करने से पुरूष की वुद्धि का विकास होता है। षष्ठी तिथि के दिन देवी के पूजन के लिए मधु का महत्व है। वह मधु ब्राहण अपने उपयोग में लें। इसके प्रभाव से साधक सुन्दर रूप प्राप्त करता है। सप्तमी तिथि के दिन भगवती की पूजा में गुड़ का नैवेद्य अर्पण करके ब्राहाण को दे देना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य शोक मुक्त हो जाता है। अष्टमी तिथि के दिन भगवती को नारियल का प्रसाद चढ़ावे फिर वह प्रसाद ब्राहण को देना श्रेयष्कर है। इसके फलस्वरूप उस पुरूष के पास किसी प्रकार के संताप नही आ सकते। नवमी तिथि को माँ के लिए लावा अर्पण करके ब्राहाण को दे देना चाहिए। इस दान के प्रभाव से पुरूष इस लोक और परलोक में भी सुखी रह सकता है। दशमी तिथि के दिन भगवती को काले तिल का नैवेद्य अर्पण करे फिर इसे ब्राहाण को दे दें। ऐसा करने सक यमलोक का भय भाग जाता है। जो एकादशी में भगवती को दही का भोग लगाकर ब्राहण को दे देता है, उस पर भगवती जगदम्बा परम संतुष्ट होती है। द्वादशी के दिन पूजन में चिउड़े का महत्व है। जो उस दिन भगवती को चिउड़ा भोग लगाकर ब्राहाण को बाँट देता है, उसे भगवती अपना प्रेम भोजन बना लेती है। त्रयोदशी के दिन भगवती को चने का नैवेद्य अर्पण करके ब्राहाण को दे दें। इस नियम का पालन करने से वाली प्रजा संतानवान हो सकती है। जो पुरूष चतुर्दशी के दिन भगवती जगदम्बा को सूत भोग लगाकर बाह्मण को दे देता है। उस पर भगवान शंकर परम प्रसन्न होते है। पूर्णिमा के दिन माँ दुर्गा को खीर भोग लगाकर श्रेष्ठ ब्राहण को अर्पण करने वाला पुरूष अपने समस्त पितरों का उद्धार कर देता है। पूर्णिमा तिथि की भाँति ही अमावस्या तिथिा की पूजा भी सम्पन्न करें। देवी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हवन करने की बात भी स्पष्ट है। जिस तिथि में जो वस्तु नैवेद्य के लिए बतायी गयी है, उसी वस्तु से उन–उन तिथियों में हवन भी करना चाहिए। यह हवन अखिल अरिष्टों का विनाश कर देता है। पूजन नित्यप्रति नियमानुसार करें।

विसर्जनः– नौ रात्रि व्यतीत होने पर दसवें दिन या पूर्णिमा तिथि को विसर्जन हेतु पूजनोपरान्त निम्न प्रार्थना करें।

रूपं देहि यशो देहि भाग्य भगवति देहि में।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि में।।
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
आयुरारोग्यमैश्वर्य देहि देवि नमोडस्तुते।।

इस प्रार्थना को करने के बाद हाथ में अक्षत व पुष्प लेकर भगवती का निम्न मंत्र से विसर्जन करना चाहिएः–

गच्छ गच्छ सुरश्रैष्ठे स्वस्थानं परमेश्वरि।

पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ।।

शक्तिधर की उपासनाः– चैत्र नवरात्र में शक्ति के साथ शक्तिधर की भी उपासना की जाती है। एक और जहाँ देवी भागवत, कालिका पुराण और मार्कण्डेय पुराण का पाठ होता है, वहीं दूसरी और श्री रामचरित मानस, श्री मद्वाल्मीकीय रामायण एंव अध्यात्म रामायण आदि का भी पाठ होता है। इसलिए यह नवरात्र देवी नवरात्र के साथ –साथ राम–नवरात्र के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। जो मनुष्य श्रद्धा–भाव संयुक्त होकर आराध्य का पूजन विधि विधान से करते है। उनके जीवन की सम्पूर्ण दैन्यता, अभाव रिक्तता समाप्त हो जाती है, एवं अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। जीवन के चार पुरूषार्थ धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

❋ ❋ ❋

शेष पेज 08 **से आगे.....**

घटनाए सम्भावित हैं। खाद्यसामग्री में मिलावट से जनता क्षुब्ध रहे।

7. नीरसेश सूर्य का फलः–नीरसेश सूर्य हो तब ताबाँ, सोना ,चाँदी, बहुमूल्य धातुऐं, माणिक, मोती, हीरा, आदि रत्न मँहगे होगे। जौ, मूँग, मटर, अरहर, घी, कपास सर्वधान्य सरसों, जूट, बारदाना के भावों में अस्थिरता रहें। शासक वर्ग में बर्चस्व को लेकर व्यर्थ के दोषारोपण हों। अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में भारत की स्थिति सुदृढ़ होगी।

8. फलेश गुरु का फल–फलों के स्वामी गुरु है खेतों में पैदावार बढ़ेगी वृक्षों में फल–फूल व वनों की वृद्धि होगी। पीली वस्तुओं के भाव सामान्य रहें। भूगर्भ भंडार में वृद्धि होगी। धार्मिक व आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि होगी।

धर्म का प्रचार प्रसार बढ़ेगा। यज्ञादि शुभकर्मो में वृद्धि होगी।

धनेश सूर्य का फल–धन का स्वामी सूर्य है इस वर्ष व्यापारी वर्ग को व्यापार से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चौपायों पशुओं के व्यापार से लाभ मिलेगा। अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि होगी। विदेशी मुद्रा कोष में वृद्धि होगी। यातायात के साधनों का विस्तार होगा

10. दुर्गेश गुरु का फल–शासन द्वारा जनता की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिये महत्वपूर्ण कदम उठाए जाऐगें जनता को निष्पक्ष न्याय मिले इसके लिये न्यायिक तंत्र में उचित सुधार होंगे। सैन्यबल व सुरक्षातंत्र में सुदृढ़ता आऐगी। चोरी, डकैती अपहरण, लूटलाट की वारदातों पर अंकुश लगाया जाऐगा। ब्राह्मण समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

नवमेध विचारः–इस वर्ष नवमेधों में 'आवर्त' मेध होने से कही वर्षा कम तथा कही अधिक होती है जिसके कारण गेहूँ, जौ, चावल, चने, कपास आदि की फसलों को नुकसान होता है। कृषि उत्पादन में कमी आऐगी। फलों, हरी सब्जियों के भावों में वृद्धि होगी। घी, तेल महँगे होंगे।

द्वादश नागपाल–इस वर्ष द्वादश नागों में प्रथुश्रव नागराज है। इसके प्रभाव से वर्षा का अभाव व फसलों को हानि होती है।

वर्ष के चार स्तम्भः–

1. **जलस्तम्भः**–चैत्रशुक्ल प्रतिपदा में रेवती नक्षत्र का योग कम होने के कारण जल का स्तम्भ बिगड़ गया है। समय पर वर्षा का अभाव पैदावार को प्रभावित करेगा। सिचांई व पेयजल संकट की समस्या बढ़ेगी। जल बंटबारे को लेकर राज्य सरकारों में विवाद रहेगा।

2. **तृण स्तम्भ**–वैशाख शुक्ल प्रतिपदा में भरणी नक्षत्र का अत्यधिक मान होने से तृण स्तम्भ अच्छा बना है। इस वर्ष घास, फूँस पशुचारा की कमी नहीं रहेगी। हरी सब्जियों का उत्पादन अच्छा रहेगा। जड़ी–बूटियों की पैदावार अच्छी रहेगी। परंतु सभी वर्गो तक उपलब्धता में कमी रहेगी।

3. **वायु स्तम्भः**–ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र का अभाव होने के कारण वायु का स्तम्भ इस वर्ष ठीक नहीं है। आँधी तुफान, बबंडर से क्षति होगी। तूफान, सुनामी से देश विदेश जन–धन हानि होगी, सक्रामक बिमारियों के फैलने का अंदेशा है।

अन्न स्तम्भ–आषाण शुक्ल प्रतिपदा को पुर्नवसु नक्षत्र का अभाव होने से अन्न का स्तम्भ लड़खडा गया है। अन्न की पैदावार में कमी आऐगी। प्राकृतिक प्रकोप अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ओलावृष्टि, हिमपात के कारण व टिडडी, चूहा, कीजें के कारण खड़े फसलों को नुकसान पँहुचेगा शासक वर्ग के लिये बड़ी चुनौती साबित होगा। महँगाई में वृद्धि होगी।

रोहिणी का वासः–रोहिणी का निवास इस वर्ष पर्वत पर है। वर्षा बहुत थोड़ी परंतु सब जगह होती है। समयोचित्त न होने के कारण फसलों को नुकसान होगा।

समय का वास–समय का वास कुम्हार के घर में होने से वर्षा में कमी से पैदावार पर असर पड़ेगा महंगाई में वृद्धि होगी। अयात–निर्यात पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। यातायात के साधनों में वृद्धि

वर्ष प्रवेश लग्न कुडली

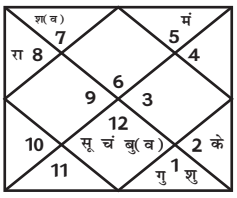

जगत लग्न कुंडली

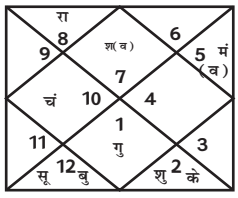

आर्द्रा प्रवेश कुंडली

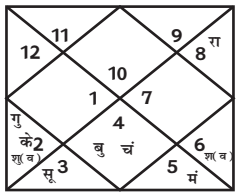

होगी। संग्रह करने वाले सुखी होंगे।

संवत 2069 का वार्षिक शुभ–अशुभ फल

वर्ष प्रवेश लग्न कुडली– विक्रम संवत 2069 का शुभारम्भ दिनांक 22 मार्च 2012 गुरुवार को रात्रि 20 घण्टा 06 मिट पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्र शुक्ल योग मीनस्थ चन्द्र के समय कन्या लग्न में हो रहा है। कन्या लग्न में उदय पूर्वी राज्यों में स्थिति सामान्य हों, दक्षिणी राज्यों में अन्न की कमी से भुखमरी की समस्या हों, पश्चिमी राज्यों में जनता में आक्रोश व अनाज महँगे हो। कही सत्ता भंग होने के संकेत मिलते है। प्रवेश के समय ग्रह स्थिति इस प्रकार है लग्नेश बुध नीच का वक्री व्यापार स्थान में बैठकर लाभेश व द्वादशेश सूर्य चंद्र से युत है। प्रतिकूल परिस्थितियों में शासन द्वारा अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार में सुरक्षा तंत्रों के लिये आवश्यक समझौते किये जाऐगें। कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिये आवश्यक प्रयास किये जाऐगें। षष्ठेश, पंचमेश शनि का वक्री होकर धन भाव में बैठना तथा चर्तुथेश व सप्तमेश और भाग्येश को दृष्टिपात करके लाभ स्थान को प्रभावित करता है। अर्थव्यवस्था पर कर्जे का व प्राकृतिक व आप्राकृतिक आपदाओं का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आर्थिक स्थिति

डाँबाडोल रहेगी। विलासिता पर बेहिसाब धन खर्च होगा। देश में पश्चिमी देशों का प्रभाव पूर्णतः दृष्टिगोचर होगा। विपक्षी वर्ग व जनता को संतुष्ट करने के लिये धन का दुरुपयोग होगा। शिक्षा के स्तर में वृद्धि होगी। शासक वर्ग द्वारा कुटनीति का प्रयोग करते हुऐ जनता का ध्यान दूसरी तरफ आकृर्षित किया जाऐगा। केतु का नवम स्थान में बैठना धार्मिक ज्ञान विज्ञान में वृद्धि करेगा परंतु असावधानी के रहते दुर्घटनाऐं सम्भावित है।

इस वर्ष राजा व मंत्री शुक्र है जो शत्रु ग्रह गुरु (इस वर्ष के दुर्गेश, फलेश व मेधेश) के साथ अष्टम भाव में है जिसके फलस्वरुप में प्राकृतिक घटनाओं के कारण पैदावार पर बुरा असर पड़ेगा। देश में लडाई झगड़े की स्थिति बनेगी। राष्ट्रकोष का अपव्यय होगा। अस्थिरता की स्थिति व्यापत रहेगी। नीरसेश व धनेश सूर्य होने के कारण अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार में भारत का वर्चस्व बढेगा। शासन तत्र में सांसदों की तीखी टीका टिप्पणी यौजनाओं को क्रियान्वित करने में अटकलें पैदा करेगी। सस्येश चन्द्रमा का सूर्य व बुध के साथ युत होना। कृषिप्रणाली पर अत्याआधुनिक यौजनाऐ बनायी जाऐगी परंतु मौसम के प्रतिकूल होने पर खड़ी फसलों को हानि होगी। रसेश मंगल मंहगाई को बढ़ाऐगे जिसके कारण शासक वर्ग को जनाक्रोश का सामना करना पड़ेगा। चिकित्सा के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान होगे। स्त्री वर्ग का वर्चस्व बढ़ेगा।

जगत लग्न कुंडली:-जगत लग्न कुंडली में तुला लग्न उदय हो रहा है। संसार में भौतिक विकास और लाभ के मालिक केन्द्र में बैठकर शुभ योग बना रहे है।

परंतु विरोधी ग्रह शनि का लग्न में बैठना व दृष्टि देना तथा लग्नेश का अष्टम में केतु के साथ बैठना और राहू का धन भाव में बैठना शुभ योगों को भंग कर रहा है। दो धार्मिक गुटों में विरोध बढ़ेगा। विनाशकारी व विध्वंसकारी योजनाओं पर अत्याधिक धन खर्च होगा। जनता त्राहि–त्राहि करेगी बिमारी प्राकृतिक आपदा व आतंकवाद से कुछ राष्ट्रों में भय व्यापत रहेगा। भूस्खलन व सुनामी जैसी घटनाओं से फिर विश्व में एक झटका लगेगा। यातायात के साधनों का दुरुपयोग होगा।

ज्ञान विज्ञान में तरक्की होगी। अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर लाभकारी योजनाओं पर समझौते होंगे। मुस्लिम राष्ट्र परस्पर युद्ध एवं विवादों में उलझे रहेगें। अमेरिका पर फिर से आर्थिक संकट गहराऐगा जिसके फलस्वरुप वह गुप्त संधि करेगा। जापान में कुछ वैज्ञानिक परीक्षण होंगे। पाकिस्तान की वित्तिय स्थिति खराब होगी। पाकिस्तानी सेना, पाकिस्तानी जनता व पाकिस्तानी शासक वर्ग एक दूसरे के खिलाफ कदम उठायेंगे। परंतु आन्तरिक मतभेद के चलते सीमा पार घुसपैठ, आंतकवाद की घटनाओं में धन व्यय करेगा। कुछ अरबदेश, रुस, स्वीडन, पौलेण्ड इन देशों का अर्न्तराष्ट्रीय स्तर मजबूत होगा।

आस्ट्रेलिया ईरान, जर्मनी में कुटनीति व मनोवैज्ञानिक युद्ध चलेंगे। आबादी में वृद्धि होगी। आर्थिक स्तर बढ़ेगा परंतु अचानक दुर्घटनाओं से जन–धन–पशुधन की हानि होगी।

जगत कुंडली में भारत का भविष्य न ज्यादा शुभ है न अशुभ। भारत का वर्चस्व विदेशों में बढ़ेगा राहू, केतु, बुध नीच राशि के तथा चन्द्रमा शत्रु राशि में के भद्रुम योग बना रहा है। जिसके परिणामस्वरुप जनता में अनेकानेक रोगों की वृद्धि, महँगाई, शासक वर्ग के प्रति असंतुष्टि, राष्ट्रीय कोष का दुरुपयोग व राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि, राजनैतिक उठापटक रहेगी। इसके विपरीत ज्ञान–विज्ञान में वृद्धि होगी। विलासिता व सुखों के साधनों में वृद्धि होगी। अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार का विस्तार होगा। कुछ भ्रष्ट नेताओं का पर्दाफाश होंगे। आन्तरिक षणयन्त्र व धोखे से शासक वर्ग व सत्ता पक्ष को हानि होगी। विदेशी आक्रमण का भय रहेगा परंतु मजबूत सैन्य बल व गुप्तचरी के कारण प्रयास विफल होंगे।

आर्द्रा प्रवेश कुंडली- भगवान सूर्यदेव का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश इस वर्ष 21 जून 2012 गुरुवार की रात्रि 22 घण्टा 18 मिनट पर मकर लग्न में होगा। जलतत्व की लग्न व चन्द्र, बुध का जलतत्व राशि में बैठना दर्शाता है वर्षा पूर्व की अपेक्षा अधिक होगी। मानसून समय से पहले आ सकता है। मैदानी क्षेत्रों में अच्छी वर्षा होगी। आद्रा प्रवेश समय द्वितीय तिथि पुर्नवसु नक्षत्र अनाज की पैदावार खुब कराता है हरी सब्जियाँ, फल, फूल, धान, आलू, प्याज, गाजर, मूली, गेहूँ, चना, ईख तथा मूँगफली, दाल की फसल अच्छी होगी। परंतु ध्रुव योग होने के कारण जनता में शासको के प्रति असंतुष्टि दर्शाता है।

शनि का कन्या राशि में वक्री बैठना, मौसम सम्बन्धी उतार–चढाव बने रहेंगे। किसाान व मजदूर वर्ग का सहयोग मिलेगा। कृषि व्यवस्था में आधुनिक टेक्नोलोजी का प्रयोग होगा। परंतु खड़ी फसलों को चूहा, टिड्डी दल व कीड़ों से नुकासान होगा। जिसके कारण काला बाजारी व जमाखोरी में वृद्धि होगी। तटीय क्षेत्रों में बाढ की स्थिति से जान–माल को हानि होगी। मुम्बई में फिर से पानी भरने का संकट गहराऐगा। सरकार किसानों को बीज सस्ते दाम में उपलब्ध कराऐगी। लेकिन खाद्यन्य में विदेशी घुसपैठ से वातावरण दुषित होगा। आम आदमी के लिये थाली मंहगी होगी। जिसके कारण असंतोष की भावना बढ़ेगी।

ग्रहण विवरण- 23 मार्च 2012 से 10 अप्रैल 2013 सवंत 2069 में कुल मिलाकर चार ग्रहण पड़ेगें जिसमें दो ग्रहण ही भारत में दृश्य होंगे।

1. 21 मई 2012 को खग्रास सूर्यग्रहण भारत से बाह्य पूर्व के देशो में दृश्य होगा। भा. स्टै. टा. के अनुसार ग्रहण रात्रि 3 बजकर 20 मिनट पर शुरु होकर सुबह 7 बजकर 6 मिनट पर समाप्त होगा।

2. 04 जून 2012 सोमवार को खग्रास चन्द्रग्रहण भारत से बाह्य पूर्व के देशों में होगा। देश के पूर्वी भाग असाम, मिजोरम, मेधालय, अरुणचलप्रदेश आदि में विरल छाया से होकर गुजरेगा। भा. स्टै. टा. के अनुसार ग्रहण का स्पर्श दिन में 03 बजकर 29 मिनट पर और मोक्ष साय 05 बजकर 37 मिनट पर होगा।

3. 13–14 बनम्बर 2012 मंगलवार खग्रास सूर्यग्रहण भारत से बाह्य देशों दक्षिणी अमेरिका, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों में दिखाई देगा। भा. स्टै. टा. के अनुसार ग्रहण मंगलवार की रात्रि में 02 बजकर 06 मिनट से शुरु होकर बुधवार को प्रातः 05 बजकर 17 मिनट पर समाप्त होगा।

4. 28 नबम्बर 2012 बुधवार को उपछायी चन्द्रग्रहण भारत के कुछ हिस्सों में दिखेगा तथा एशिया के कई देशों, अरब देशों, अफ्रीका में, यूरोप व कनाडा में दिखेगा। उपछायी ग्रहण चन्द्रमा की मामूली सी क्रान्ति मलिन दृश्य होगी। इसलिये मान्यता नगण्य है।

विशेष- इनमें 21 मई और 28 नवम्बर वाले ग्रहण ही भारत में के कुछ इलाकों में दिखेंगे। शान्ति विधान सविधि सम्पन्न करा लेने पर अशुभता की आशंका नहीं रहती है। जिनकी कुंडली में ग्रहण योग निर्मित है उन्हें ग्रहण की शांति अवश्य करनी चाहिये। ❋❋❋

शेष पेज 10 **से आगे.....**

4. अनर्पाश्रतोऽ यन्त्र अर्थात्:गुरु के सामने सीधे होकर बैठना चाहिए किसी वस्तु का सहारा लेकर नहीं बैठना चाहिए। अथवा पैरों को फैला कर नहीं बैठना चाहिए।

5. हीनान्न वस्त्र स्यात्सर्वदा गुरु सन्निधौ अर्थात्:गुरु के सम्मुख अन्न व वस्त्रादि से स्वयं को गुरु से हीन रखना चाहिए अर्थात् अधिक धनिक अथवा उच्च होने का दिखावा नहीं करना चाहिए।

6. वाम्येम वाम्यस्य प्रतिधातमाचार्यस्य वर्जयेच्छ्रयसां च अर्थात्:गुरु के वचनों को अपने वचनों से खण्डन नहीं करना चाहिए। यह आचरण दुराग्रह को दिखाता है।

7. न पश्येत् प्रेतसंस्पर्श न क्रुद्धस्य गुरोर्भुखम् अर्थातः क्रोधित गुरु को ओर दृष्टि नहीं डालनी चाहिए अर्थात जब गुरु क्रोध में हो तो अपनी दृष्टि नीचे रखनी चाहिए व क्रोध को शान्त होने की प्रतिक्षा करनी चाहिए।

इस प्रकार यदि शिष्य उन शिष्टाचारों का उपयोग गुरु के सम्मुख ध्यान में रखें। तो अनायास ही गुरु की विशेष कृपा प्राप्त होगी इसमें संदेह नहीं है। आदर भाव ही प्रथम सोपान है गुरु को प्राप्त करने का इस सरलतम उपाय से हम सभी शिष्य अपना जीवन सफल बना सकते है। आचार विचार से हीन व्यक्ति कही सफल नहीं।

आचार हीः पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
परत्र च सुखी न स्यात्तस्मादाचारवान् भवेत।।

अर्थात्:आचार हीन मनुष्य संसार में निन्दित होता ही है और परलोक में भी सुख नहीं पाता। इसलिए आचारवान् बनाना चाहिए क्योंकि–**शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण और ज्योतिष**– उन छः प्रकार के अध्ययन हो पर भी ये वेद आचार हीन शिष्टाचार रहित व्यक्ति को पवित्र नहीं कर पाते। मृत्युकाल में आचार हीन व्यक्ति को ये सभी वेद व ज्ञान छोड देते है जिस प्रकार पंख उगने पर पक्षी घोंसला को छोड़ देते है। भारतीय परम्परा में गुरु–शिष्य के पावन संबंध को शिष्टाचार की परमावश्कता है। इस परम्परा को जीवंत करने पर सफलता स्वयं ही हमारे द्वार पर दस्तक देगा। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

शेष पेज 11 **से आगे.....**

और पीला रंग शुभ है। जीवन के 9, 12, 30, 35, 38 वर्ष भाग्योन्नतिकारक हैं। त्वचा रोगों से बचना चाहिए।

मूल अंक 4 वाले व्यक्ति प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये व्यक्ति नवीन खोज करने में दक्ष, प्रगतिशील, कठिन परिश्रमी, उग्र स्वभाव वाले, संघर्षप्रिय तथा गंभीर होते हैं। धन संग्रह अधिक नहीं कर पाते। इनके लिए 4, 13, 22, 40, 58, 59 वां वर्ष भाग्योन्नतिकारक होगा। शनिवार, सोमवार, रविवार शुभ दिन तथा नीलमणि रंग विशेष अनुकूल है। मूंगा धारण करना शुभ है।

मूल अंक 5 वाले व्यक्ति का अधिष्ठाता ग्रह बुध है। ये फुर्ती से काम करने वाले, व्यापारादि व्यवसाय में उन्नति करने तथा चंचल वृत्ति के होते हैं। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में ढल जाते हैं। महत्वपूर्ण वर्ष 15, 25, 32, 41, 51, 57 वां वर्ष होते हैं। बुधवार, शुक्रवार तथा श्वेत व हरित रंग अति शुभ है, पन्ना धारण करना शुभ रहेगा।

मूल अंक 6 वाले व्यक्ति संगीत, फोटोग्राफी, चित्रकला, सौंदर्य प्रेमी, आदर्शवादी तथा कल्पनाशील होते हैं। किसी अन्य की अधीनता इन्हें कभी स्वीकार नहीं होती है। मंगल, गुरु व शुक्रवार के दिन तथा नीला व गुलाबी रंग शुभ है। अपनी योग्यता से धनोपार्जन करना पसंद करते हैं। जीवन के 15, 24, 33, 42, 51 वें वर्ष भाग्योन्नतिकारक रहेंगे।

मूल अंक 7 वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि ग्रह चंद्रमा तथा नेपच्यून हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, परिवर्तनशील तथा नए–नए स्थानों पर भ्रमण करने में रुचि रखते हैं। प्रायः आर्थिक संकट बना रहता है। शनिवार, रविवार तथा इनके लिए हरा रंग शुभ रहता है। 16, 26, 20, 51, 52, 61 वें वर्ष भाग्योन्नतिकारक है। श्वेत गोमेद धारण करना लाभदायक रहता है।

मूल अंक 8 वाले व्यक्ति प्रतिनिधि ग्रह शनि है। ऐसे व्यक्ति अंतर्मुखी, कठिन परिश्रमी तथा दृढ़ निश्चयी होते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक संभव साधन (उचित व अनुचित का ध्यान किये बिना) अपनाते हैं। संघर्षमय, दूरदर्शी तथा गूढ़ विद्याओं में रूचि रखने वाले होते हैं। वायु रोग से पीड़ित रहते हैं। चंद्रवार, शनिवार, रविवार तथा गहरा नीला, स्लेटी रंग विशेष अनुकूल होते हैं। जीवन के 26, 33, 35, 44, 53 वर्ष भाग्योन्नतिकारक होते हैं। नीलम धारण करना शुभ रहेगा।

मूल अंक 9 वाले व्यक्ति प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये लोग स्पष्टवादी, स्वाभिमानी, कठिन परिश्रमी, उग्र प्रकृति किन्तु दयालु स्वभाव के होते हैं। समस्त जीवन संघर्ष में व्यतीत होता है और रक्त विकार का भय रहता है। शुक्रवार, मंगलवार व रविवार तथा लाल व गुलाबी रंग विशेष अनुकूल, तांत्रिक विद्याओं में भी रूचि रखते है। जीवन के 18, 27, 31, 33, 36, 45, 54 वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

दशमी:-दशमी में जन्में जातक देश–भक्त, तेजस्वी, यज्ञादि कार्यो में रुचि वाला, धर्म–अधर्म को जानने वाला, शुद्ध चित्त, सत्यवादी और धनी होता हैं।

एकादशी:-एकादशी में उत्पन्न धनवान, बुद्धिमान, पुत्रवान, पवित्र विचारवान, राज्य सभा में मान ग्रहण करने वाला परिवार प्रेमी होता हैं।

द्वादशी:-द्वादशी में उत्पन्न जातक चंचल, अस्थिर, परोपकारी, बन्धन मुक्त और विदेश यात्रा करने वाला होता हैं।

त्रयोदशी:-त्रयोदशी में जन्में जातक विद्या विनय सम्पन्न, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, जितेन्द्रिय परोपकारी, महासिद्ध पुरुष, बड़ी आयु वाला, पुत्र पौत्रों वाला, वीरता और साहस रखने वाला तथा मनमानी करने वाला होता हैं।

चतुर्दशी:-चतुर्दशी में पैदा हुये वचनबद्ध, धर्मात्मा, यशस्वी, राज्यमान्य, धनवान, शक्तिमान, तर्क–विर्तक करने वाला, कामी, दूसरों को ज्ञान देने वाला होता हैं।

पूर्णिमा:-पूर्णिमा में पैदा हुआ जातक धन सम्पत्ति वाला, बुद्धिमान, उद्यमी, जिव्हा का स्वाद रखने वाला, पर स्त्रीगामी, सत्यवादी व विशेषज्ञ होता हैं। ईश्वर पर आस्था होती हैं व अपने कार्य क्षेत्र में सफल होता हैं।

अमावस्या:-अमावस्या में उत्पन्न पराक्रमी, दीर्घसूत्री, गुप्त विचारों वाला, धनी व चतुर होता हैं। बुद्धि से बहुत तेज व अधिक कामी होता हैं। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

शेष पेज 13 से आगे.....

भाव–भावेश पर शनि व राहु का प्रभाव पड़ता हैं उसका फल विलम्ब से प्राप्त होता है। यदि आपका विवाह शनि के प्रभाव से विलम्ब हो रहा है तो किसी शुभ शनिवार को प्रातः काल नहा धो कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। फिर 125 ग्राम सरसों का तेल में 250 ग्राम गुड़ डाल कर गर्म करे। बुलबुले उठने के बाद इसे उतार ले और ठंडा होने दें। ठंडा होने पर इसमें अपना मुँह देखें। फिर सवा पाँच मुठ्ठी काले तिल अपने सिर से सात वार उसार कर इसमें डाल दें। फिर इसे मिला कर रोटी पर रख कर काले कुत्ते को खिलाए अथवा काली गाये को खिलाए। ऐसा 41 दिन करे। शनि देव की कृपा से आपका विवाह शीघ्र ही सम्पन्न होगा।

यदि विवाह कारक ग्रहों पर जब राहु का प्रभाव होता है और विवाह में विलम्ब हो रहा है तो जातक निम्न उपाय को 41 दिन तक पूरी श्रद्धा व विश्वास से करे। शुक्ल पक्ष की किसी शुभ बुधवार को प्रातः काल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें। फिर एक हरा कपड़ा ले उसे एक जटा वाला सूखा नारियल और सवां पाँच मुठ्ठी जौ दूध से धोकर रखे। इसमें सात कोयले सात कील सात वादाम रख कर पोटली बनाए और अपने सिर पर से सात बार उसार कर नदी में प्रवाहित करे। उक्त प्रक्रिया **ऊँ रां राहवें नम:** मंत्र का उच्चारण अवश्य करे।

जिन कन्याओं की सगाई बार–बार टूट रही है तो वह यह उपाय अवश्य करें। किसी शुभ गुरुवार को स्नान आदि करके स्वच्छ वस्त्र धारण करे एक गिलास में दूध में पानी मिलाए और थोड़ा केसर डालें। एक पीले कपड़े में सात पीले फूल, सात हल्दी की गाठे सात वेसन के लड्डू, एक जटा वाला सूखा नारियल की पोटली बनाए। सात अगरबत्ती एक चौमुख दीपक लें। फिर शिव जी के मन्दिर में दूध शिव लिंग पर चढ़ाए दीपक व अगरबत्ती जलाए और पोटली शिवजी के चरणों में अर्पित करें। आपनी कामना कहें और सीधे घर आ जाये शिवजी आपकी कामना जरुर पूरी करेंगे।

इसके अतिरिक्त एक अत्यन्त प्रचलित उपाय यह है कि विवाह योग्य कन्याए गुरुवार का व्रत रखें। वह गुरुवार को स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर एक घी का दीपक व मौली लेकर केले के वृक्ष की 21 परिक्रमा कर उस पर मौली लपेटे। फिर घर आकर चने पानी में भिगों दे। सांय काल जब व्रत खोले तक घी का दीपक जलाए चने व गुड का बृहस्पति देव को भोग लगाए। उस प्रसाद को बच्चों में बांटे। ऐसा 21 बृहस्पति वार करें। बृहस्पति देव की कृपा से आपका विवाह अतिशीघ्र हो जायेगा। ❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262